चन्दामामा
जनवरी १९७२

Photo by: SURAJ N. SHARMA

प्रत्येक पुस्तकालय में रखने योग्य!

★

'SONS OF PANDU'
Rs. 5-25

'THE NECTAR OF THE GODS'
Rs. 4-00

अंग्रेजी में रचित: लेखिका
श्रीमती मधुरम भूतलिंगम

भेंट देने व संग्रह करने योग्य
बालकोपयोगी पुस्तकें!

★

आज ही आदेश दे:

डाल्टन एजेन्सीस

'चन्दामामा बिल्डिंग्स'

मद्रास - २६

महान
आकांक्षाएँ?
डीलक्स कैमल इंक इस्तेमाल कीजिए।
camel
deluxe ink

चन्दामामा
संस्थापक: नागिरेड्डी
संचालक: 'चक्रपाणी'
पाठकों से बिनती!
बंगला देश के शरणार्थियों के कारण हमारे देश को अनेक त्याग करने पड़ रहे हैं। उनके भार को वहन करने के लिए हमारी सरकार ने पत्रिकाओं पर दो पैसे एक्साइस शुल्क लगाया है। हमारा विश्वास है कि देशभक्त पाठक इस उत्तरदायित्व को वहन करेंगे। इस आशा से चन्दामामा का मूल्य जनवरी से दो पैसे बढ़ा रहे हैं। पाठकों से निवेदन है कि वे चन्दामामा को २ पैसे एकसाइज शुल्क के साथ ९२ पैसे में खरीदे।
वर्ष: २४ जनवरी १९७२ अंक: ५
CHITRA

संपूर्ण कुंभो न करोति शब्दम्; अर्द्धो घटो घोष मुपैति रनम्;
विद्वान कुलीनो न करोति गर्वम्; गुणैर्विहीना बहु जल्प यंति ।।। १ ।।

[भरा हुआ घट आवाज नहीं करता, अध भरा घट ध्वनि करता है। इसी प्रकार कुलीन एंव विद्वान व्यक्ति घमण्ड नहीं करता। पर अवगुण वाला ही ज्यादा बकता है]

श्रुति विभिन्ना; स्मृतयश्च भिन्ना;
नैको मुनिर्यस्य वचो प्रमाणम;
धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायाम्;
महाजनो येनगत: स पंथा........ ।। २ ।।

[वेदों में अंतर हैं, स्मृतियों में भी अंतर हैं। किसी भी मुनि की कही हुई बात को हम काट नहीं सकते। (इसलिए) धर्म के तत्व को जानना कठिन मालूम होता है। (अत:) बड़े लोगों के दिखाये गये पथ का ही हमें अनुसरण करना है।]

न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षम्
सतं सदा निंदति; नात्र चित्रम्!
यथा किराती करिकुंभजाताम्
मुक्तां परित्यज्य बिर्भाति गुंजाम......... ।। ३ ।।

[जो दूसरों के महान गुणों को समझ नहीं पाता, वह उनकी निंदा करता है। इसमें आश्चर्य की बात नहीं है। वैसे ही किरात जाति की स्त्री कुंभस्थल के मोतियों को छोड़ गुंजन की माला धारण करती है।]

ईमानदारी

एक दिन एक किसान अपना खेत जोत रहा था। तब उसे मिट्टी में एक मोती मिल गया। वह बहुत क़ीमती मालूम हो रहा था। इसलिए किसान एक जौहरी के हाथ बेचने के ख्याल से शहर की ओर चल पड़ा।

जौहरी ने मोती की अच्छी तरह से जांच की और कहा–"भाई साहब, यह मोती बड़ा क़ीमती है। मैं इसे दो सौ रुपयों में खरीद सकता हूँ।" किसान को आश्चर्य हुआ कि इस छोटे से मोती का ज्यादा दाम कैसे मिल रहा है। वह बड़ी खुशी से उसे बेचने के लिए राजी हो गया। इस पर जौहरी ने मोती लेकर दो सौ रुपये किसान के हाथ दे दिये। जौहरी की ईमानदारी पर मन ही मन खुश होते हुए किसान अपने गाँव के लिए निकल पड़ा।

किसान शहर पार करके थोड़ी ही दूर गया था कि कहीं से दो नक़ाब वाले चोर आकर उस पर टूट पड़े। किसान के हाथ से दो सौ रुपये छीनकर कहीं चंपत हो गये। किसान रोते-पीटते फिर शहर को लौट पड़ा और न्यायाधीश से सारा वृत्तांत कह सुनाया।

न्यायधीश को जौहरी का बर्ताव विचित्र मालूम हुआ। क्योंकि बढ़िया से बढ़िया मोती भी दो सौ रुपयों से ज्यादा नहीं बिकता। किसान ने जो मोती बेचा, वह भले ही बढ़िया मोती हो, पर व्यापारी क्यों कर उसका पूरा दाम देगा? अलावा इसके किसान भी रत्नों का पारखी नहीं, ऐसे लोगों को तो व्यापारी पूरा दाम नहीं देता, बल्कि मुश्किल से उसका चौथा दाम देगा। यदि व्यापारी ईमानदार ठहरा तो आधा दाम देगा। मगर पूरा

पंकज मल्होत्रा

दाम देना तो आश्चर्य की बात ही कर लायगी ।

न्यायाधीश ने व्यापारी की ईमानदारी की जांच करनी चाही । इसके साथ ही साथ उसने चोरों को पकड़ने का इंतजाम भी किया । इसके बाद न्यायाधीश ने किसान को चार दिन बाद मिलने का आदेश दे भेज दिया । वह साधारण पोशाकें पहन कर व्यापारी के पास पहुँचा और बोला–"महाशय, मैं अमुक गाँव से आ रहा हूँ । मेरे गाँव के जमीन्दार एक अंगूठी बनवाना चाहते हैं । उसमें बिठाने के लिए एक क़ीमती मोती चाहिये । चाहे उसका मूल्य ज्यादा भले ही क्यों न हो ।"

व्यापारी ने तुरंत किसान के हाथ से खरीदा मोती निकाला और कहा–"साहब, मैंने कल ही इस मोती को एक व्यक्ति से दो सौ रुपयों में खरीदा है । पच्चीस रुपये नफे पर मैं इसे आप को बेच सकता हूँ ।"

व्यापारी की ईमानदारी पर न्यायाधीश को कोई संदेह नहीं हुआ ।

"मेरे पास मोल-भाव करने का वक़्त नहीं है । तुरंत मुझे अपने गाँव जाकर यह मोती सुनार के हाथ सौंपना है ।" इन शब्दों के साथ न्यायाधीश व्यापारी के हाथ रुपये दे उस गाँव की ओर चल पड़ा, जिस गाँव का निवासी उसने अपने को बताया था ।

न्यायाधीश की कल्पना के अनुसार शहर पार करके थोड़ी दूर जाते ही दो नकाब वाले चोर कहीं से आये और न्यायाधीश पर टूट पड़े, उसके हाथ का मोती छीन लिया ।

लेकिन दूसरे ही मिनट में न्यायाधीश के भटों ने उन चोरों को बन्दी बनाया और उनके नक़ाब खोल दिया, वे चोर और कोई न थे, जौहरी और उसका नौकर थे ।

न्यायाधीश समझ गया कि जौहरी ईमानदारी से रत्नों का दाम क्यों देता है । उसने व्यापारी से किसान को दो सौ रुपये वापस दिलाये और व्यापारी को दस साल की जेल की सजा सुनायी ।

घृणा का फल

एक गाँव में कामाक्षी नामक एक गरीब औरत थी। उसका पति कोई काम-धाम करना नहीं जानता था। उनके नौ बच्चे थे। कोई चारा न देख पति-पत्नी गाँव में जाकर भीख मांगते और उसीसे अपने दिन काटते थे। कभी उन्हें पेट-भर खाना नहीं मिलता था।

कामाक्षी के एक बहन थी, उस का नाम मीनाक्षी था। वह अमीर घर में ब्याही गयी थी। लेकिन वह बड़ी कंजूस थी। वह दूसरे गाँव में रहती थी। गरीबी में तड़पने वाली उसकी बहन कामाक्षी या उसके बच्चों को मीनाक्षी ने एक जून भी अपने घर ले जाकर खाना नहीं खिलाया था।

मीनाक्षी के एक लड़की थी। उस की शादी भी पक्की हो गयी। तब एक दिन मीनाक्षी अपनी छोटी बहन कामाक्षी के घर पहुँच कर बोली—"कामाक्षी, मैं अपनी बेटी की शादी करने जा रही हूँ। तुम थोड़े दिन के लिए मेरे घर आ जाओ, तुम्हें मेरी मदद करनी है, मगर तुम अपने साथ अपने बच्चों व पति को लाकर मेरी इज्जत धूल में न मिलाओ। तुम अकेली आ जाओ।" ये बातें कह कर मीनाक्षी अपने गाँव चली गयी।

शादी के एक दिन पहले कामाक्षी अपनी दीदी के गाँव केलिए चल पड़ी। अपनी मां को रवाना होते देख सब बच्चे उस के पीछे पड़े।

"तुम सब मेरे साथ जाओगे तो तुम्हारी काकी मार बैठेगी। मैं लौटती बार तुम सब केलिए बढ़िया मिठाइयाँ ले आऊँगी।" इस प्रकार बच्चों को समझा-बुझा कर कामाक्षी के घर पहुँची।

मीनाक्षी ने कामाक्षी के सामने कई शर्तें रखीं। वे ये हैं कि वह बरातियों से

उमेश शर्मा

मिलकर बात नहीं कर सकती, शादी के पंडाल में नहीं जावे और लोगों की पंक्ति में बैठ कर खाना न खावे ।

वास्तव में मीनाक्षी अपनी छोटी बहन को चाकरी करने बुलायी थी । कामाक्षी ने अपनी बहन के कपड़े धोकर सुखाये, बर्तन मांजे, घर-आंगन में झाड़ू-बुहार किया । उसके यह सारा काम करते देख बरातियों ने सोचा कि वह उस घर की कोई नौकरानी है । सब के भोजन करने के बाद पत्तल उठाये, बचा-खुचा खाना खाकर कामाक्षी ने सोचा, मानों उसे अमृत ही मिल गया है ।

शादी के तीन-चार दिन बाद कामाक्षी ने अपने घर लौटते हुए बचे हुए बासी पदार्थ एक झाबे में रख लिये । सर पर रखकर चलने को हुई ।

मीनाक्षी ने बहन के सर पर झाबा देख पूछा—"अरी, झाबे में क्या भरा है?"

"बासी पदार्थ हैं दीदी । बच्चे घर पर यह सोचकर इंतज़ार करते होंगे कि मैं शादी के पकवान लेते जाऊँगी ।" कामाक्षी ने दीनता पूर्ण स्वर में कहा । "वाह, बासी हो गये तो क्या फेंक देंगे? पशुओं को खिलायेंगे तो मजे से खा लेंगे ।" ये शब्द कहते मीनाक्षी ने झाबा खींच लिया, पशुओं के सामने डालते हुए कहा—"अब चली जाओ ।"

कामाक्षी का दिल असहनीय दुख से भर उठा । अपनी दीदी की लड़की की शादी

में आकर वह खाली हाथ लौट रही है। इसलिए उसने सोचा कि ऐसी दरिद्रता की ज़िंदगी जीने के बदले मर जाना अच्छा है।

कामाक्षी पैदल चली जा रही थी, उस का पैर किसी मुलायम चीज़ पर जा पड़ा। वह घबरायी नहीं, झुक कर देखा तो, रास्ते में कोई मरा हुआ बड़ा सांप पड़ा था।

कामाक्षी ने सोचा कि भगवान ने उनके मरने के लिए कोई मार्ग दिखाया है। उसने सांप का सर और पूँछ काट डाला और बाक़ी शरीर के टुकड़े करके झाबे में डाल लिये।

घर पहुँचते ही बच्चों ने कामाक्षी को घेर कर पूछा—"माँ, हमारे लिए क्या लायी हो?"

"तुम्हारी काकी ने मछली दी है। पका कर खिलाऊँगी।" कामाक्षी ने जवाब दिया। उसके बाद उसने सांप के टुकड़ों को एक बर्तन में डाल कर, पानी भर दिया और चूल्हे मर चढ़ाया।

तब अपने पति से बोली—"मैं पड़ोस में जाकर थोड़े से मिर्च मांग लाती हूँ। तुम कलछी से बर्तन में हिलाते रहो।" यह कह कर वह बाहर चली गयी।

कामाक्षी का पति कलछी से बर्तन में टुकड़ों को हिलाता रहा तो उसे कंकड़ों के हिलने की सी आवाज़ सुनायी देने लगी।

वह अचरज में आकर बाहर भाग गया और अपनी पत्नी को वापस बुला लाया। लौट कर दिये की रोशनी में कामाक्षी ने देखा कि सोने के टुकड़ों जैसी चीजें चमक रही हैं। उन्हें देख पति-पत्नी विस्मय में आ गये।

उस वक़्त कामाक्षी ने सारी बातें अपने पति को सुनायीं।

दोनों ने बर्तन से अपने खर्च केलिए एक टुकड़ा निकाला। उसे एक जौहरी के पास ले गये। जौहरी ने उसका सच्चा मूल्य उन्हें दे दिया। उन रुपयों से पति-पत्नी ने रसोई के बर्तन, खाने-पीने की चीज़ें और सब केलिए कपड़े भी खरीदे। सभी बच्चे

उस दिन नये कपड़े पहन कर भर पेट खाना खाकर आराम से सो गये।

अचानक उनकी हालत को सुधरे देख गाँव वालों को भी बड़ा आशचर्य हुआ।

कुछ लोगों ने कहा–"हाल ही में कामाक्षी अपनी दीदी के घर हो आयी है, वह बड़ी धनी है, शायद उसने थोड़ा-बहुत धन कामाक्षी को दिया होगा।"

अपनी गरीब बहन को आराम से दिन काटने का समाचार सुनकर मीनाक्षी को बड़ा दुख हुआ। वह कामाक्षी के गाँव में दौड़ी-दौड़ी आयी और उस गाँव के मुखिये से शिकायत की–"मेरी छोटी बहन मेरे घर से कुछ चुरा लायी होगी। आप इसका इन्साफ़ कीजिये।"

मुखिये ने कामाक्षी को बुला भेजा। बहनों का विवाद सुनने के लिए गाँव के सभी लोग वहाँ पर जमा हुए।

कामाक्षी ने पहले से अंत तक सारी बातें सच सच बता दीं। मुखिये ने उस बर्तन को उसी रूप में ले आने का आदेश दिया। कामाक्षी ने बर्तन लाकर मुखिये के सामने रखा।

"बहन, तुम भगवान की शपथ लेकर अगर सचमच यह बर्तन तुम्हारा हो तो, तुम अपने घर लेते जाओ।" मुखिये ने मीनाक्षी से कहा।

मीनाक्षी ने बर्तन उठाया। बर्तन में से साँप सर बाहर करके फुफकारते मीनाक्षी को काटने को दौड़ा।

"बाप रे, मर गयी।" चिल्लाते मीनाक्षी नें मिट्टी के उस बर्तन को ढीला किया। वह नीचे गिर कर फूट गया। सोने के टुकड़े चारों तरफ़ फैल गये। पर साँप का कहीं पता न था।

इस दृश्य को देख सब ने मीनाक्षी की निंदा की। मुखिये ने कामाक्षी को सोने के उन टुकड़ों को बटोरने की अनुमति दी। वह उन सोने के टुकड़ों को लेकर घर चली गयी। उस दिन से कामाक्षी, उस का पति और उसके बच्चे आराम से अपने दिन काटने लगे।

शिलारथ

[१५]

[खड्गवर्मा और जीवदत्त राजा नित्यानंद से बात कर ही रहे थे कि पुजारी राक्षस हाथी पर सवार हो आ पहुँचा और खड्गवर्मा तथा जीवदत्त जब हाथी के निकट आये तब हाथी ने उन्हें सूँड से पकड़ लिया। मौक़ा पाकर जंगली युवकों ने उन्हें बन्दी बनाया। राजा ने सैनिकों को आदेश दिया कि वे जंगली युवकों का सामना करे। बाद...]

जंगली युवक भाले व तलवार ले चिल्लाते हुए राजा नित्यानंद की ओर बढ़े तब राजा के सैनिक घबराकर भाग खड़े हुए। राजा की चेतावनी का उन पर कोई असर न पड़ा। राजा के रथ का सारथी पहले ही रथ को मोड़कर भागने के लिए तैयार था। उसने राजा का आदेश देने के पूर्व ही घोड़ों को ललकारा और घोड़े तेज़ी के साथ राजधानी की ओर बढ़ चले। राजा एकदम चकित था।

"सारथी, हम कायरों की भांति लड़ाई के मैदान से भागकर जा रहे हैं। इससे विघ्नेश्वर पुजारी की हिम्मत और बंध जायगी। हो सकता है कि वह हमारी राजधानी पर ही हमला कर बैठे। हमें तत्काल कोई उपाय करना होगा।" राजा नित्यानंद ने कहा।

सारथी पल भर मौन रहा, तब बोला– "महाराज, हम लोग पुजारी की दृष्टि में कभी कायर बन गये हैं। यदि हम भागकर न आते तो वहीं ठहरकर क्या कर सकते थे? या तो हम मारे जाते या बन्दी बन जाते। आपने स्वयं देखा भी है कि दुस्साहस करके वे दोनों क्षत्रिय युवक क्या हो गये? बेचारे हमारी रक्षा करने जाकर ख़ुद मुसीबत में फँस गये।"

"हाँ, हाँ, बेचारे उन युवकों ने हमारी रक्षा करने के निमित्त साहस किया। कैसी वीरता दिखायी! अगर वे पुजारी के हाथों में न पड़ते तो हमारी सहायता करते। विघ्नेश्वर पुजारी उनकी जान लेकर ही छोड़ेगा।" ये शब्द कहते नित्यानंद ने सर घुमाकर देखा।

उस समय विघ्नेश्वर पुजारी के राक्षस हाथी पर खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को जंगली युवक रस्सों से हाथ-पैर बाँधकर उनके चेहरों पर काले वस्त्र लपेट रहे थे।

राजा को रथ पर खड़े उसी की ओर देखते देख पुजारी का क्रोध उमड़ पड़ा। दांत पीसते हुए उसने मन में सोचा कि आज राजा को प्राणों के साथ बन्दी बनाकर सबके सामने उसका वध कर डालूँ! आनंदपुर राज्य के सिंहासन पर बैठूँ! मगर उसका यह प्रयत्न बिलकुल असफल रहा।

"इन दोनों युवकों ने आखिरी क्षणों में प्रवेश करके सैंधवों की तरह हमारा सामना किया और राजा नित्यानंद की जान बचायी। फिर भी हमें इन दोनों को मारना नहीं चाहिए। इन्हें अपने वश में करने का कोई उपाय सोचना चाहिए। देखो तो, ये दोनों मर गये हैं या बेहोश हैं? जाँच करके बताओ।" विघ्नेश्वर पुजारी ने अपने अनुचरों से कहा।

पुजारी का आदेश पाते ही एक जंगली युवक जो छोटा-सा वैद्य था, झटपट हाथी पर चढ़ गया। खड्गवर्मा तथा जीवदत्त की नाकों के पास हाथ रखकर उनके श्वास

की जाँच की, तब नाड़ी की परीक्षा की। धीमी गति से नाड़ी चल रही थी।

"पुजारी प्रभु! ये दोनों अभी मरे नहीं। नाड़ी की गति चल रही है। गहरी चोट खाकर बेहोश पड़े हुए हैं।" जंगली वैद्य ने बताया।

"तब तो जल्दी-जल्दी चलो। गुफ़ा के पास पहुँचकर इनके खान-पान का इंतज़ाम करेंगे। अगर ये ज़िंदा रहकर हमारा साथ दे तो हम आनंदपुर के साथ और कई राज्यों को जीत सकते हैं। इस ऐरावत जाति के हाथी का रहस्य बहुत समय तक गुप्त नहीं रखा जा सकता है। अतः हमें जल्द इन दो युवकों को अपने पक्ष में करना है। उनकी मदद से हम आज नहीं तो कुछ दिन बाद ही सही, आनंदपुर पर क़ब्ज़ा कर सकते हैं।" पुजारी ने कहा।

खड्गवर्मा और जीवदत्त पूर्ण रूप से बेहोश नहीं थे, बल्कि उन्हें रस्सों से बांध दिया गया था, उनकी वजह से दोनों बड़ी पीड़ा का अनुभव कर रहे थे। अलावा इसके उनके मुँह पर काला वस्त्र बांध दिया गया था। इस वजह से उन्हें सांस लेने में बड़ी परेशानी हो रही थी। फिर भी उन्हें विघ्नेश्वर पुजारी की बातें अस्पष्ट सुनाई दे रही थीं।

आध घंटे तक पुजारी का वह हाथी ऊबड़-खाबड़ प्रदेश पर चलकर एक जगह रुक गया। तब पुजारी हाथी पर से उतर पड़ा और जंगली युवकों से बोला—"इन दोनों को सावधानी से उतारकर गुफ़ा के ईशान दिशावाले कमरे में ले जाओ और इनके बंधन खोल दो। इनके लिए चार-पाँच दिनों के लिए आवश्यक खाना और पानी उस कमरे में पहुँचा दो। इस बीच हमें एक ज़रूरी काम करना होगा।"

जंगली युवकों ने खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को हाथी पर से उतारा और उन्हें उठा ले जाकर गुफ़ा के एक कमरे में ले गये। इसके बाद उनके बन्धन खोल

दिये, चार-पाँच दिनों के लिए आवश्यक खाना और पानी रखकर बाहर चले गये। पर उनके चेहरों पर बन्धे काले वस्त्र वैसे ही छोड़ दिये गये। तब तक खड्गवर्मा और जीवदत्त ने ऐसा अभिनय किया कि मानों वे अब तक बेहोश हैं।

जंगलियों के बाहर जाते ही अपने चेहरों पर बन्धे काले वस्त्र खोलकर दोनों क्षत्रिय युवक बैठ गये।

कमरे में ज्यादा रोशनी न थी। कहीं खिड़की तथा दर्वाज़े भी दिखाई दे न रहे थे। फिर भी कहीं से मंद हवा बह रही थी। जीवदत्त ने एक बार सारे कमरे की ओर देखा और आश्चर्य के साथ अपने अस्त्र-तलवार व धनुष-बाणों की तरफ़ देखनेवाले खड्गवर्मा से कहा—"खड्गवर्मा, तुम चकित क्यों हो रहे हो? पुजारी ने हमारे हथियार हड़प नहीं लिये। कारण जानते हो न? वह हमारे साथ दोस्ती करके हमें अपने अनुचर बनाना चाहता है! हमारी मदद से वह अपना उल्लू सीधा करना चाहता है। समझें!"

खड्गवर्मा ने गुस्से में आकर तलवार उठायी और कहा—"चाहे उस दुष्ट का प्रयत्न कोई भी क्यों न हो, यदि वह मेरे हाथों में आया तो उसकी जान लेकर छोड़ूंगा। हम अपने रास्ते विन्ध्याचल की ओर जा रहे थे, नाहक़ इसने हमको रोक दिया और हमें नाना प्रकार की यातनाएँ दीं।"

"उफ़! बुलंद आवाज़ में मत बोलो। हो सकता है कि अंधेरे के आँख और दीवार के कान हों! पहले मुझे देखने दो कि यह कमरा कितना बड़ा है और इसके कहीं खिड़की या दर्वाजे हैं।" ये शब्द कहते जीवदत्त उठ खड़ा हुआ और पत्थर की दीवार को टटोलते चारों ओर घूमने लगा। उसे कहीं दीवार में दर्वाजे दिखाई नहीं दिये। मगर पत्थरों के बीच के छेदों से हवा अन्दर आ रही थी। इससे मालूम हो रहा था कि गुफ़ा के इस

कमरे को पत्थर पर पत्थर जोड़कर बनाया गया है।

जीवदत्त खड्गवर्मा के पास लौटकर यह समाचार दे बोला–"खड्गवर्मा, फिलहाल हमें पुजारी के द्वारा कोई खतरा नहीं है। जब हम हाथी पर लाये गये तब पुजारी ने जंगली युवकों से जो बातें कहीं, वे मुझे आश्चर्य चकित कर रही हैं।"

"पुजारी ने अपने अनुचरों से कई बातें कहीं, उनमें कौन बात तुम्हें आश्चर्य जनक मालूम होती है?" खड्गवर्मा ने पूछा।

"एक बात तो यह है कि ऐरावत जाति के हाथी का रहस्य ज्यादा दिन तक गुप्त नहीं रह सकता और दूसरी यह है कि पुजारी दो-चार दिनों में कोई महान कार्य करने जा रहा है?" जीवदत्त ने कहा।

"इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। हो सकता है कि वह ऐरावत जाति का हाथी हो। वरना वह हाथी ही नहीं हो सकता। और रहा, उनके द्वारा साधने वाला महान कार्य, आनंदपुर के राज्य पर अधिकार करना ही होगा।" खड्गवर्मा ने बताया।

"खड्गवर्मा, ठीक मेरे भी मन में ये ही संदेह पैदा हुए। आज हम यहीं पर विश्राम करेंगे और कल प्रातःकाल सूर्योदय के होते ही हम यहाँ से निकल जायेंगे

और पुजारी का अंतिम फ़ैसला करेंगे।" जीवदत्त ने समझाया।

"हाँ, हाँ, ऐसा ही करेंगे! पुजारी ने हमारे लिए चार-पाँच दिनों के लिए आवश्यक खाना-पानी का उचित प्रबंध किया है। इस बीच हमें यहाँ से भाग जाने का कोई उपाय सोचना होगा। वाह, वह भी कैसा पुण्यात्मा है! हमारे लिए अच्छा मौक़ा दे गया है।" ये शब्द कहते खड्गवर्मा ज़ोर से हँस पड़ा।

दिन बीत गया। सूर्यास्त के होते ही उस कमरे में अंधेरा फैल गया। दोनों क्षत्रिय युवकों ने दीप जलाये और उस रोशनी में खाना खाकर आराम से सो गये।

दूसरे दिन सवेरे कमरे के बाहर बड़ी हलचल हुई जिससे वे दोनों जाग पड़े। बाहर सैकड़ों की संख्या में जंगली युवक जमा हो ज़ोर-शोर से बात-चीत कर रहे थे। उनकी बातें सुनने की दोनों मित्रों ने कोशिश की, पर उन्हें ठीक से सुनाई नहीं दी।

"जीवदत्त, लगता है कि विघ्नेश्वर पुजारी जंगली युवकों के दल के साथ कहीं हमला करने जा रहा है।" खड्गवर्मा ने कहा।

"यह हमला और कहीं नहीं, शायद राजा नित्यानंद का अंत करके गद्दी पर अधिकार करने के लिए आनंदपुर पर आक्रमण करने का होगा।" जीवदत्त ने कहा।

"तब तो क्या हम उस दुष्ट के बन्दी बनकर यहीं पर बैठे रहेंगे?" खड्गवर्मा ने पूछा।

"यहाँ यूँ ही बैठे क्यों रहेंगे? पुजारी जब अपने दल-बल के साथ निकल पड़ेगा, तब हम इस कमरे से बाहर निकल जायेंगे। इसके बाद हम सोचेंगे कि हमें क्या करना है?" जीवदत्त ने सलाह दी।

"इस अंधेरी कोठी से बाहर निकल जाना क्या ऐसा आसान काम है?" खड्गवर्मा ने आश्चर्य के साथ पूछा।

"क्यों नहीं? देखते रहो न?" ये शब्द कहते जीवदत्त दीवार के पास गया, पत्थरों के बीच के छोटे से छेद से बाहर देखा। उसे पाँच-छे फुट की दूरी पर ठीक वैसी ही एक दूसरी दीवार दिखाई दी।

"अरे, यहाँ पर तो पत्थरों पर पत्थर और दीवारों के बाजू में दीवार, यही इस गुफा की रीति है। बाहर जंगली युवकों की हलचल कम हो जाने दो, तब देखा जायगा।" जीवदत्त ने समझाया।

एक आध घंटे बाद उस प्रदेश में नीरवता छा गयी। जीवदत्त ने सोचा कि शायद फिर हलचल हो जाय, पर बड़ी देर तक हलचल के न होते देख खड्गवर्मा

की ओर मुड़कर बोला–"खड्गवर्मा, इस कमरे से बाहर जाने के लिए हम रास्ते का पता लगाने में क्यों परेशान हो जावें! कल शाम को हमको यहाँ छोड़ जानेवाले जंगली युवक जिस गुप्त मार्ग से भीतर आये, उस मार्ग को उन्हीं के हाथों से हम खुलवा देंगे। जरूरत पड़ने पर ही तुम भीतर आनेवालों को मारो, वरना नहीं। मैं जब तुम्हें इशारा करूँगा तभी मारना।"

इसके बाद जीवदत्त कमरे के सभी कोनों की ओर घूमते ज़ोर से चिल्लाने लगा–"विघ्नेश्वर पुजारी! विघ्नेश्वर पुजारी!" खड्गवर्मा भी अपने मित्र के स्वर में स्वर मिलाकर चिल्लाने लगा। उनकी आवाज़ से सारी गुफा गूंज उठी।

एक-दो मिनट बाद कमरे की दीवार के एक कोने में चौकोना पत्थर बड़ी आवाज़ के साथ हटने लगा। उसके तुरंत बाद एक जंगली युवक ने कमरे के अन्दर झांकते हुए गरज कर पूछा–"तुम लोग चिल्लाते क्यों हो?"

जीवदत्त आश्चर्य का अभिनय करते जंगली युवक की ओर पल भर देखता रहा, तब उछल कर उसका गला दबाते हुए बोला–"तुम खींचातानी करने की कोशिश करोगे, तो तुम्हारा गला दबाकर मार डालूंगा; खबरदार! यदि तुम्हें

अपनी जान बचानी है तो मेरे सवालों का जवाब दो। अब तुम पहले अन्दर आ जाओ।" ये शब्द कहते जीवदत्त ने उसे भीतर खींच लाया और दीवार से सटाकर बैठा दिया।

जंगली युवक जान के डर से थर थर कांपने लगा। जीवदत्त उसे समझाने के ख्याल से उसकी पीठ थपथपाते बोला–"इस कमरे का पहरा देनेवाले लोग और कितने हैं?"

"मेरे सिवा एक और है। बाक़ी सभी लोग हमारे पुजारी प्रभु के साथ आनंदपुर पर हमला करने गये हैं।" जंगली युवक ने जवाब दिया।

"तब तो तुम छेद के पास जाकर दूसरे पहरेदार को भी भीतर बुला लाओ। उसे तुमने सावधान किया तो तुम्हारी पीठ में मेरा दोस्त छुरी भोंक देगा। खबरदार!" जीवदत्त ने उसे चेतावनी दी।

जंगली युवक छेद के पास गया। सर बाहर करके दूसरे पहरेदार को भी अन्दर बुलाया। उस वक़्त खड्गवर्मा ने अपनी छुरी जंगली युवक की पीठ से टिका रखी थी। एक मिनट के अन्दर दूसरा पहरेदार भी छेद में से कमरे के भीतर आया। तब तक उसे मालूम न था कि उसका साथी क़ैदियों के हाथों में बन्दी है। वह झट घूमकर बाहर जाने को हुआ, मगर खड्गवर्मा ने उसका कंधा पकड़ कर कमरे के बीच उसे फेंक दिया।

"अब सच बता दो, वरना तुम दोनों के सर इसी वक़्त काट डालेंगे। उस पुजारी के साथ सभी जंगली चले गये हैं, या कुछ लोग इन गुफाओं और टीलों का पहरा दे रहे हैं?" जीवदत्त ने पूछा।

खड्गवर्मा इस बार तलवार उठाकर जंगली युवकों को निशाना बनाये खड़ा रह गया। जंगली युवक कांपते हुए बोले–"हम सच बताते हैं, हमें मार न डालियेगा! हमारे सभी जंगली लोग पुजारी प्रभु के साथ आनंदपुर की ओर चले गये हैं। सिर्फ़ हम दोनों को आपका पहरा देने छोड़ गये हैं।"

"तब तो तुम दोनों एक घंटे तक इसी कमरे में रह जाओ। हम लोग इस बीच लौटकर तुम्हें सकुशल बाहर भेज देंगे।" जीवदत्त ने कहा।

जंगली युवकों ने हाथ जोड़कर खड्गवर्मा और जीवदत्त को नमस्कार किया। इसके बाद खड्गवर्मा और जीवदत्त कमरे से बाहर आये और उस छेद को पत्थर से ढक दिया। तब वे दोनों नीचे की ओर सीढ़ियों से उतर कर थोड़ी दूर गये, उस गुफा में से दूसरी सीढ़ियों को पार करके पहाड़ के ऊपरी भाग में पहुँचे।

(और है)

संन्यासी की पत्नी
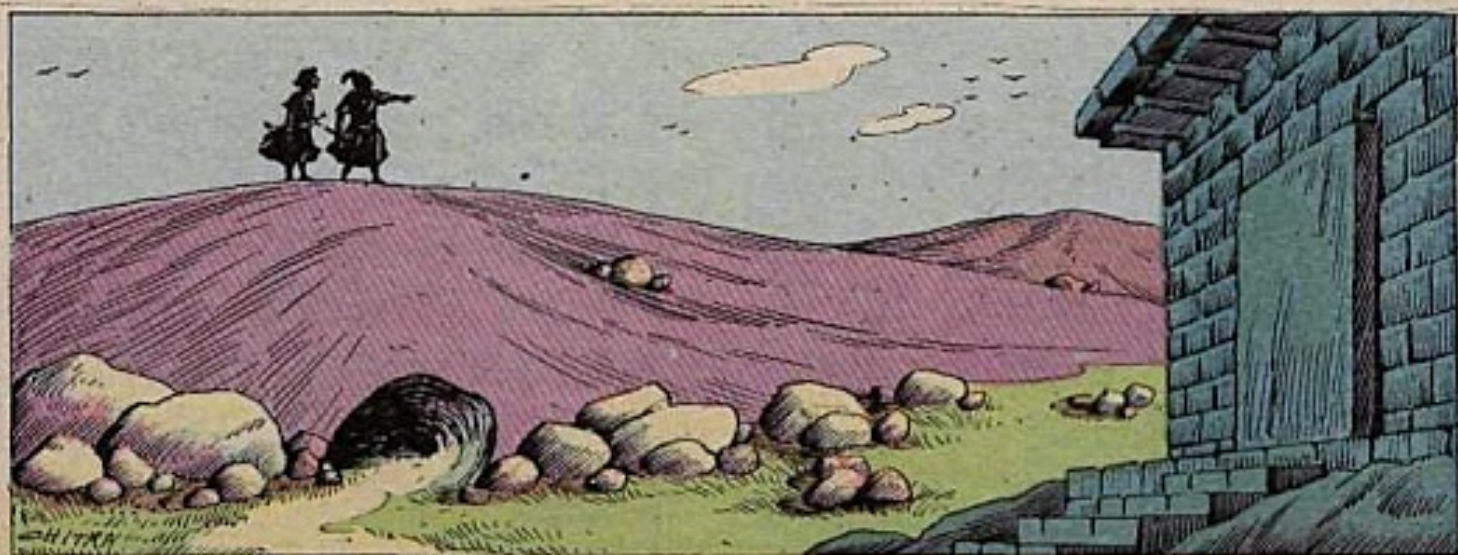
हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, तुम स्वयं अपने को इस प्रकार कठिनाइयों में डाल रहे हो, तुम्हारी यह हालत देखने पर मुझे संदेह होता है कि तुम्हारे विश्वास उठ जायेंगे और तुम पागल हो जाओगे। कठिनाइयों के कारण कनकभद्र का मन विचलित हो गया था। मैं तुम्हें उसकी कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: महेश्वरम् नामक गाँव में एक किसान रहा करता था। उस के पास थोड़ी सी ज़मीन थी, मगर वह कड़ी मेहनत करके अधिक फ़सल पैदा करता और अपने परिवार को पालता था। उस के कोई संतान न थी, मगर अधेड़ उम्र में उसके एक

वेताल कथाएँ

"पारिवारिक जीवन बिताने की मेरी इच्छा नहीं है। मैं सन्यासी बनकर मुक्ति का मार्ग ढूंढना चाहता हूँ।"

बुढ़ापे में जो विचार मन में पैदा होने चाहिये, ऐसे विचार अपने पुत्र के मन में यौवन में ही पैदा होते देख बूढ़े माँ-बाप को कुछ आश्चर्य ही हुआ। वे रोज़ कनकभद्र को तंग करने लगे कि वह जल्दी शादी करे। अपने माँ-बाप से तंग आकर कनकभद्र एक दिन काशी के लिए चल पड़ा। एक बड़े सन्यासी के पास सन्यास लेकर तत्वोपदेश पाने लगा।

कुछ साल बीत गये। महेश्वरम गाँव से आये हुए यात्रियों ने काशी में कनकभद्र से मिलकर बताया कि कुछ समय पूर्व उसके पिता का देहांत हो गया है।

लड़का पैदा हुआ। किसान ने लड़के का कनकभद्र नामकरण किया और लाड़-प्यार से उसे पालने लगा।

कनकभद्र जब विवाह के योग्य हुआ, तब उसके पिता ने समझाया–"बेटा, तुम शादी करके अपना घर संभालो। युवकों को विलंब से शादी करना ठीक नहीं है। मैं और तुम्हारी माँ–हम दोनों बुढ़ापे में पग धर रहे हैं। हमें बहुत साल बाद तुम पैदा हुए। तुम्हारे बच्चे हो जायें तो हम अपने पोतों और पोतियों को देख खुश हो जायेंगे।"

मगर कनकभद्र ने अपने पिता की बात नहीं मानी। उल्टे उसने कहा–

यह बात सुनते ही कनकभद्र को बड़ा दुख हुआ कि उसकी वृद्ध माता का क्या हाल होगा। उसने अपने गुरु से कहा– "गुरुदेव, मैं एक बार अपने गाँव जाकर अपनी माँ को देख आऊँगा। आज ही मुझे समाचार मिला कि मेरे पिता का स्वर्गवास हो गया है। सन्यास लेने के बाद मैंने अपनी माँ को एक बार भी नहीं देखा।"

"पगले, सन्यासी का पिता कौन है? माँ कौन? यह सब केवल भ्रम है!" गुरु ने समझाया।

"ऐसी बात नहीं, गुरुदेव! यदि मेरे पिताजी ने थोड़ा-बहुत धन बचाया हो, तो उसे लाकर मैं अपने मठ को सौंप दूंगा।" कनकभद्र ने कहा।

इस पर गुरुजी ने मान लिया।

रास्ते में महेश्वरम की ओर जानेवाले यात्रियों के दल से कनकभद्र भी जा मिला। उसकी यात्रा भी आराम से चलने लगी। चार पड़ाव पूरा करके यात्रियों का दल जब फिर चल पड़ा, तब एक घने जंगल में लुटेरों ने उस दल को लूटा। कुछ यात्रियों को लुटेरों ने मार डाला, कुछ यात्री भाग गये। जो यात्री लुटेरों के हाथ लगे, उन्हें लुटेरों ने बांट लिया। कनकभद्र और पार्वती नामक एक औरत एक लुटेरे के हिस्से में आये। वह डाकू उन दोनों को गंगा के किनारे स्थित अपने कुटीर में ले गया और उनसे घर के काम-काज कराने लगा।

डाकू के घर चार-पाँच गायें थीं। गायों को चराने व दाना-पानी देने का काम कनकभद्र को सौंपा गया। पार्वती डाकू के घर के सारे काम किया करती। डाकू के मन में एक दिन एक विचार आया कि ये दोनों मेरे गुलाम हैं। इन दोनों को दंपति बना दे तो इनकी होनेवाली संतान के द्वारा मेरे गुलामों की संख्या बढ़ जायगी। इस प्रकार सोचकर उसने उन दोनों के लिए एक कुटी बनवायी और कहा-"मैं नहीं जानता कि तुम दोनों

का पहले कैसा रिश्ता था? पर आज से तुम दोनों पति-पत्नी हो! इस कुटी में तुम दोनों अपनी गृहस्थी चला लो।"

दोनों जब उस कुटी में पहुँचे, तब पार्वती घबरा गयी। कनकभद्र ने उसे समझाया—"मैं तो सन्यासी हूँ। इसलिए तुमको मुझ से डरने की कोई ज़रूरत नहीं। हमें अपने मालिक का विरोध करना ख़तरे को मोल लेना है। इसलिए हम प्रकट रूप में पति-पत्नी के रूप में अभिनय करते ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे।"

ये बातें सुनने पर पार्वती की घबराहट जाती रही, बल्कि कनकभद्र के प्रति उसके मन में श्रद्धा भी पैदा हुई। गुलामी की उस हालत में भी वे दोनों साथ-साथ रहते, परस्पर सुख-दुखों को बांटते, रात के समय पुराण-कथाओं तथा वेदांत पर विचार करते आराम से दिन काटने लगे।

डाकू उन दोनों के व्यवहार से बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने उन्हें पूरी स्वतंत्रता दे दी। मगर धीरे-धीरे कनकभद्र के मन में परिवर्तन होने लगा। उसने सोचा—"मैं तो सन्यासी हूँ। सब कुछ त्याग चुका हूँ। मेरी दृष्टि में गुलामी तथा स्वतंत्रता में कोई अंतर नहीं है। मगर पार्वती कुलीन और योग्य युवती है। उसे किसी योग्य व्यक्ति के साथ विवाह करके सुखपूर्वक गृहस्थी चलानी चाहिये। ऐसी हालत में वह एक डाकू के घर गुलाम बनकर जी रही है। यह अनुचित है। शायद वह प्रकट रूप में कुछ न कहती हो, मगर इस नीरस ज़िंदगी से मुक्त होने के लिए उसका मन छटपटाता होगा। उसको मुक्त करने का मार्ग क्या है?"

कनकभद्र ने इस बात पर कई दिन तक विचार किया, पर वहाँ से भाग जाने के सिवाय उसे दूसरा कोई मार्ग न सूझा। उसने एक दिन की रात को पार्वती से यह बात कही।

"मुझे तो यह ज़िंदगी दूभर मालूम होती है। मगर मैं औरत हूँ, क्या कर

सकती हूँ? चाहो तो तुम भाग जाओ और आज़ादी की ज़िंदगी जिओ। मुझे भी साथ ले जाओगे तो तुम्हारे लिए मैं समस्या बन जाऊँगी।" पार्वती ने समझाया।

"मैं तुम्हारे वास्ते ही भाग जाना चाहता था। इसलिए मेरे अकेले भाग जाने का कोई सवाल ही नहीं उठता।" कनकभद्र ने कहा।

"तब तो यहाँ से भाग जाने का कोई उपाय सोचो। इस प्रयत्न में भले ही मेरी जान चली जाय, मुझे कोई चिंता न होगी।" पार्वती ने कहा।

रात को उनके बारे में कोई सोचनेवाला न होता था। नदी भी पास में थी। इसलिए भाग जाना उनके लिए कोई कठिन काम भी न था।

एक दिन पार्वती ने उन दोनों के लिए चार दिन का भोजन पदार्थ तैयार किया। उन पदार्थों को एक गठरी में बांधकर दो गायों को साथ ले दोनों नदी के किनारे पहुँचे। गायों की मदद से नदी पार करके सवेरे तक चलकर एक शहर में जा पहुँचे। एक सराय में जाकर उसके मालिक से कनकभद्र ने कहा—"यह औरत पार्वती मेरी पत्नी है। हम रात भर यहाँ ठहरना चाहते हैं।" सराय के

मालिक ने मान लिया। सुबह कनकभद्र ने पार्वती को उसके गाँव भेजना चाहा, लेकिन पार्वती यह बता न पायी कि उसका गाँव किस प्रांत में है!

इसलिए पार्वती ने कहा—"अगर मैं किसी तरह अपने घर पहुँच भी जाऊँगी तो कोई मुझे घर में रखने को तैयार न होगा। जब तक मैं डाकू के घर रही, तब तक गुलामी की ज़िंदगी जीने को मैं तैयार हो गयी थी। यदि तुमको आपत्ति न हो तो मैं तुम्हारे ही घर चाकरी करते अपने दिन काट लूँगी। तुमने बताया कि तुम्हारी माँ बूढ़ी है। मैं उसकी सेवा करूँगी।"

कई मंजिल पार करके आख़िर कनकभद्र पार्वती के साथ अपने गाँव महेश्वरम में पहुँचा। कनकभद्र की माँ ने इस बीच काफ़ी तक़लीफ़ें झेली थीं। बहुत समय बाद अपने पुत्र को देख वह रो पड़ी।

कनकभद्र ने अपनी माँ को सांत्वना दी और कहा—"माँ, तुम बहू के वास्ते तड़प रही थी न। देखो, मैं तुम्हारे लिए एक सुंदर बहू को लाया हूँ।" इन शब्दों के साथ उसने अपनी माँ को पार्वती का परिचय कराया। पार्वती को देख बूढ़ी फूली न समायी।

इसके बाद कनकभद्र पार्वती के साथ गृहस्थी चलाते माँ को खुश रखने लगा।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजन्, कनकभद्र के विचित्र व्यवहार का कारण क्या है? उसने बचपन में ही संन्यास क्यों लिया? विरागी होने के बाद उसने फिर से गृहस्थ जीवन को क्यों स्वीकार किया? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"कनकभद्र का वैराग्य ज़िंदगी के अनुभव से प्राप्त वैराग्य नहीं है। वह अपने पिता जैसे जीना नहीं चाहता था, इसलिए वैराग्य को चुन लिया। मगर जब वह भी कष्ट झेलने लगा, तब वह असली ज़िंदगी से परिचित हुआ। मां के प्रति उसकी ममता बढ़ गयी। लेकिन पार्वती को लेकर उसके मन में जो चिंता हुई, वह अनुभव से हुई। एक नारी यदि एक पुरुष की ज़िंदगी में बहुत समय तक हिस्सा बांट लेती है, तो उन दोनों के बीच सहज रूप से ही दांपत्य जीवन शुरू हो जाता है। कनकभद्र जब घर पहुँचा, तब तक उसका वैराग्य पूर्ण रूप से जाता रहा, अतः वह गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर पाया।"

राजा के इस तरह मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

घमण्ड का नतीजा

अवंती राज्य के दरबार में हरनाथ शास्त्री तथा गुरुनाथ शास्त्री नामक दो पंडित रहा करते थे। उन्हें इस बात का बड़ा घमण्ड था कि उनके जैसे अक़्लमंद दुनिया भर में नहीं हैं। वे सदा दूसरों का अपमान किया करते थे।

कलिंगपुर के दरबार में सुगुणशर्मा नामक एक पंडित था। वह एक उच्च कोटि का पंडित और बुद्धिमान था। उसकी कीर्ति अनेक देशों में फैल गयी थी।

सुगुणशर्मा की कीर्ति का समाचार सुनकर हरनाथ शास्त्री तथा गुरुनाथ शास्त्री ने सोचा कि किसी परीक्षा में सुगुणशर्मा को हराकर उसका आपमान करे, जिस से उनका यश सारे देशों में फैल जाय।

वे दोनों पंडित अपने राजा की अनुमति लेकर कलिंग राजा के दरबार में पहुँचे और बोले-"महाराज, हम दोनों अवंती राज्य के दरबारी पंडित हैं। हमने सुना है कि आपके दरबार में सुगुणशर्मा नाम. पंडित हैं। उनको हराने आये हैं।"

कलिंग राजा की अनुमति पाकर सुगुण शर्मा ने कहा-"मैं बैसे कोई बड़ा पंडित नहीं हूँ। फिर भी आप मुझे हराने आये हैं, इसलिए आप दोनों को अलग अलग बुलाकर एक सवाल करूँगा। यही आपकी परीक्षा होगी। उस सवाल का आप सही जवाब देंगे तो मैं समझूँगा कि आप दोनों मुझ से बड़े पंडित हैं।"

दूसरे दिन दरबार में परीक्षा का प्रबंध हुआ। अपने राज्य के दरबारी पंडित की बुद्धिमत्ता को खुद देखने के ख्याल से लोग बड़ी संख्या में आये। सुगुणशर्मा ने एक छोटे से पत्थर को धागे से बाँध दिया और उसे एक स्तम्भ पर लटका दिया।

विमल कुमार

उसी पत्थर से एक और धागा बाँध कर उसे नीचे लटका दिया।

इसके बाद पहले हरनाथ शास्त्री को दरबार में बुलाया गया। हरनाथ शास्त्री दरबार में प्रवेश करके सुगुणशर्मा की बगल में जा बैठा। तब सुगुणशर्मा ने हरनाथ से कहा– "शास्त्रीजी, इस पत्थर के ऊपर और नीचे धागे बाँधे गये हैं। मैं इस वक़्त निचला धागा पकड़ कर खींचने जा रहा हूँ। क्या आप बता सकते हैं कि मेरे खींचने पर नीचे का धागा टूट जाइगा या ऊपर का?"

"ऊपर का धागा टूट जायगा।" हरनाथ शास्त्री ने झट कह दिया।

सुगुणशर्मा ने निचला धागा पकड़ कर ज़ोर से खींच लिया, पर हरनाथ के कहे मुताबिक़ ऊपर का धागा नहीं टूटा, बल्कि नीचे का धागा टूट गया।

"देखा है न? आप हार गये। आप अब गुरुनाथ शास्त्री को भेजिये।" सुगुणशर्मा ने कहा।

हरनाथ ने गुरुनाथ के पास जाकर सारा समाचार सुनाया और कहा–"सोचे-समझे बिना मैंने कहा कि ऊपर का धागा टूट जायगा और हार गया। तुम बताओ कि निचला धागा टूट जायगा। इस तरह विजयी हो हमारी इज्जत बचाओ।"

इस बीच सुगुणशर्मा ने टूटे हुए धागे को खोलकर उस पत्थर से दूसरा धागा बाँध दिया और नीचे की ओर लटका दिया। गुरुनाथ भी सभा में पहुँचकर सुगुणशर्मा की
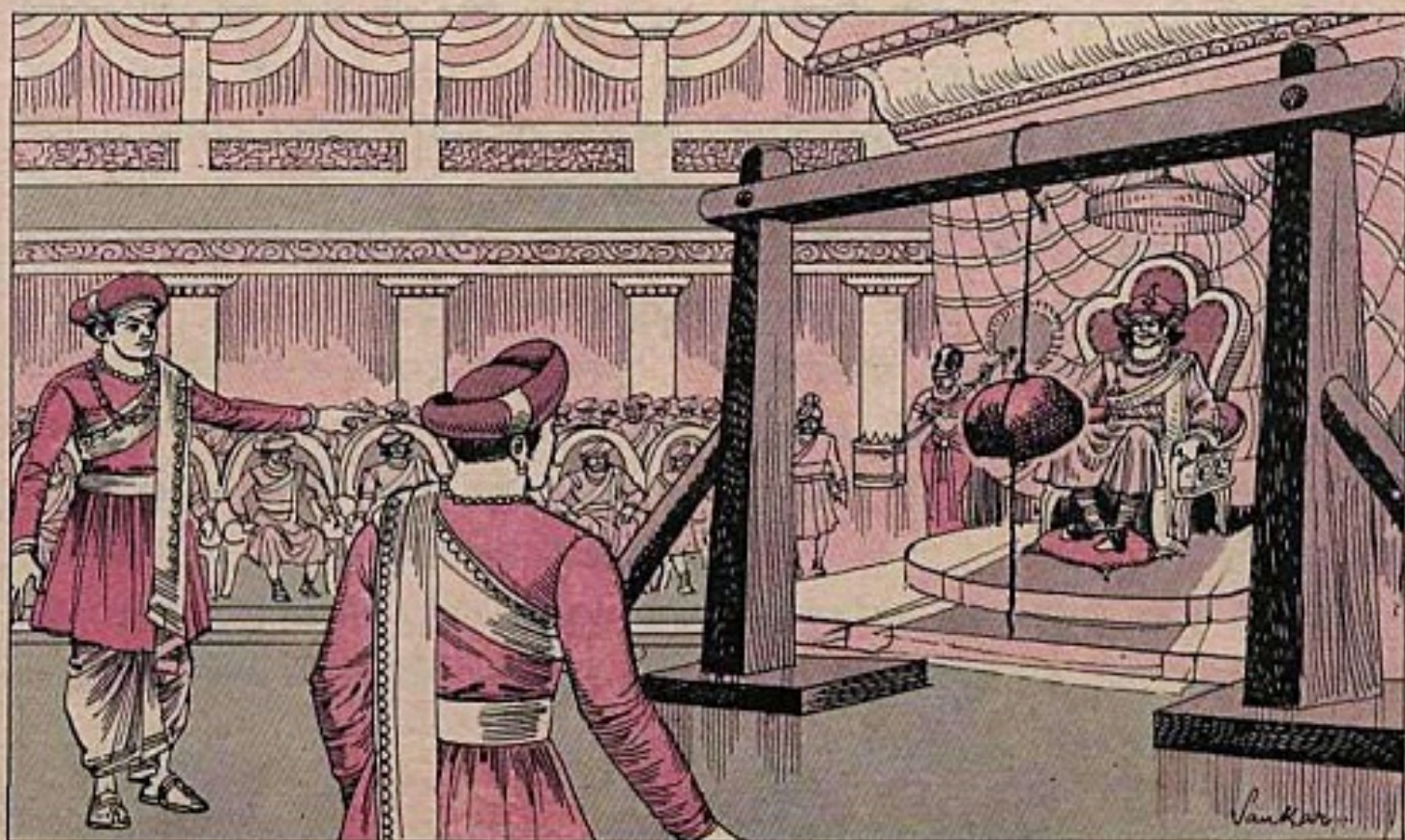
बगल में बैठ गया। सुगुणशर्मा ने गुरुनाथ से वही सवाल पूछा जो हरनाथ से पूछा था।

"निचला धागा ही टूट जायगा।" गुरुनाथ ने कहा।

सुगुणशर्मा मन ही मन हँस पड़ा और निचला धागा पकड़कर धीरे से खींचने लगा। थोड़ी देर बाद पत्थर के ऊपर का धागा टूटकर पत्थर नीचे गिर पड़ा।

सब लोग आश्चर्य में आ गये!

इस पर सुगुणशर्मा ने गुरुनाथ से कहा—"इस छोटी-सी परीक्षा में आप दोनों हार गये। मैं आपके पांडित्य की बात नहीं जानता। हो सकता है कि आप दोनों बड़े पंडित हों! मगर दोनों में ज्ञान की कमी है और घमण्ड ज्यादा है। इसीलिए बिना बुलाये व जान-पहचान के मुझे हराने आये हैं। आगे ऐसे काम करके नाहक़ अपमानित न हों!" इस तरह उन दोनों को समझा-बुझा कर भेज दिया।

राजा की समझ में न आया कि सुगुणशर्मा ने एक बार निचले धागे को और दूसरी बार ऊपरी धागे को कैसे तोड़ा? उसने सुगुणशर्मा से इसका रहस्य पूछा।

इस पर सुगुणशर्मा ने कहा—"महाराज, यह तो छोटी-सी युक्ति है। हर चीज में एक तरह की जड़ता होती है। पहली बार मैंने निचले धागे को ज़ोर से खींचा। पत्थर के भार को ढोने वाले उस धागे में पहले से ही एक प्रकार का तनाव है। मगर निचले धागे को खींचने पर उसके तनाव के बढ़ने के पहले ही धागा टूट गया। दूसरी बार मैंने धागे को धीरे से खींचा। निचले धागे में टूटने लायक़ तनाव के आने के पहले ही पत्थर को ढोने वाले ऊपर के धागे का तनाव टूटने लायक़ स्थिति में पहुँचा। इस युक्ति का कोई भी प्रयोग कर सकता है।"

राजा सुगुणशर्मा की युक्ति पर प्रसन्न हुआ। अपने दरबार की मर्यादा की रक्षा करने के उपलक्ष्य में सुगुणशर्मा को अच्छा पुरस्कार दिया।

किफायती का कारण

श्यामनारायण अग्रवाल बड़ा धनी था। वह कंजूस नहीं था, पर क़िफायती था। एक दिन उसके पास सोमनाथ नामक एक किसान आया और बोला–"महाशय, दीपावली का त्योहार आनेवाला है। पच्चीस रुपये उधार दे दीजिये।" श्यामनारायण ने दे दिया।

उसी दिन शाम को श्यामनारायण त्योहार के दिन के लिए अपनी पत्नी को नयी साड़ी ख़रीदने कपड़े की दूकान पर पहुँचा। वहाँ पर सोमनाथ पच्चीस रुपये की क़ीमती साड़ी ख़रीद रहा था।

श्यामनारायण ने दूकानदार से दस-बारह रुपये की क़ीमतवाली साड़ी दिखाने को कहा। सोमनाथ यह देख पूछ बैठा–"अजी, श्यामनारायणजी, आप तो धनी हैं। इतने सस्ते की साड़ी क्यों ख़रीद रहे हैं? दुगुना दाम दे तो बढ़िया साड़ी मिल जायगी।" इन शब्दों में व्यंग्य भरा था।

"क़िफायत करनी चाहिये, सोमनाथ! वरना कोई आकर पच्चीस रुपये उधार माँगे तो कहाँ से दे सकता हूँ?" श्यामनारायण ने उत्तर दिया।

आशीर्वाद

पुराने जमाने में कांचीपुर में गोविंदराज नामक एक धनी रहा करता था। वह अव्वल दर्जे का कंजूस और मक्खीचूस था। द्वार पर कोई भिखारी आ खड़ा होता तो वह उसे डाँट-डपट कर भगा देता। गोविंदराज कुबड़ा था, इसलिए लोग उसे कुबड़ा गोविंदराज कहा करते थे।

एक दिन गोविंदराज के घर एक भिखारी आया। उसने खाना माँगा। गोविंदराज ने उसे डाँट बतायी।

"बाबूजी! तीन दिन से भूख के मारे मरा जा रहा हूँ। मुझ में चलने की भी ताक़त नहीं है। एक कौर खाना दो।" भिखारी ने याचना की।

गोविंदराज ने उसे गालियाँ सुनायीं और अपने नौकरों से खदेड़वा दिया।

भिखारी भूख से परेशान था। वह बड़बड़ाते थकावट के मारे सड़क के किनारे बैठ गया। वह बड़ा निराश था। इसलिए गहरी आहें लेने लगा।

उस रास्ते से चलनेवाले एक अंधे ने भिखारी की आहें सुनीं। वह भिखारी के पास जाकर बोला–"भैया, तुम कौन हो? आहें क्यों भरते हो? क्या हुआ तुम्हें?"

"मैं एक भिखारी हूँ। कई घरों में गया, मगर मुट्ठी भर खाना नहीं मिला। भूख से मर रहा हूँ। बेहोशी आ रही है।" भिखमंगे ने कहा।

"मेरे घर चलो। मेरे साथ खाना खा लो।" इस तरह सांत्वना देकर अंधा आदमी भिखारी को अपने घर ले गया।

अंधे ने भिखारी को पेट भर खाना खिलाया। भिखारी बहुत खुश हुआ। उसने दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम किया और कहा–"भगवान की कृपा से आपकी

नीलिमा श्रीवास्तव

आँखें फिर दिखाई दे।" यह आशीर्वाद देकर भिखारी अपने रास्ते चला गया।

उस दिन रात को अंधे की आँखों से बराबर पानी निकला। सवेरा होते ही उसकी आँखें दिखाई देने लगीं। उसकी खुशी की कोई सीमा न रही।

अंधे की आँखों के दिखाई देनेवाली खबर सारे गाँव में आग की तरह फैल गयी। लोग यह खबर कहानी की तरह कहने-सुनने लगे।

यह खबर गोविंदराज के कानों में भी पड़ी। वह दौड़े-दौड़े अंधे के घर आया और पूछा—"क्या यह सच है कि तुम्हारी आँखें दिखाई देती हैं? यह तो बड़ा अचरज मालूम होता है। असल में बात क्या हुई? सच सच बतला दो। मैं भी तो जान लूँ?"

"कल तुम्हारे घर के पास एक भिखारी बैठे भूख से कराह रहा था। उसे तुमने कुछ भी नहीं खिलाया। मुझे उसकी हालत पर दया आयी। मैंने कल रात को उसे भर पेट खाना खिलाया। उसने मुझे आशीर्वाद दिया कि मेरी अंधी आँखें दिखायी दे। उसकी मेहर्बानी से मेरी आँखें दिखायी दे रही हैं।" दृष्टि पाये हुए व्यक्ति ने कहा।

"ओह; कैसी भूल हो गयी है! वह भिखारी कोई जादूगर होगा। उसे मैंने डाँटकर भगा दिया। उसे खाना खिलाकर तृप्त कर दिया होता तो मेरी कुबड़ी जाती
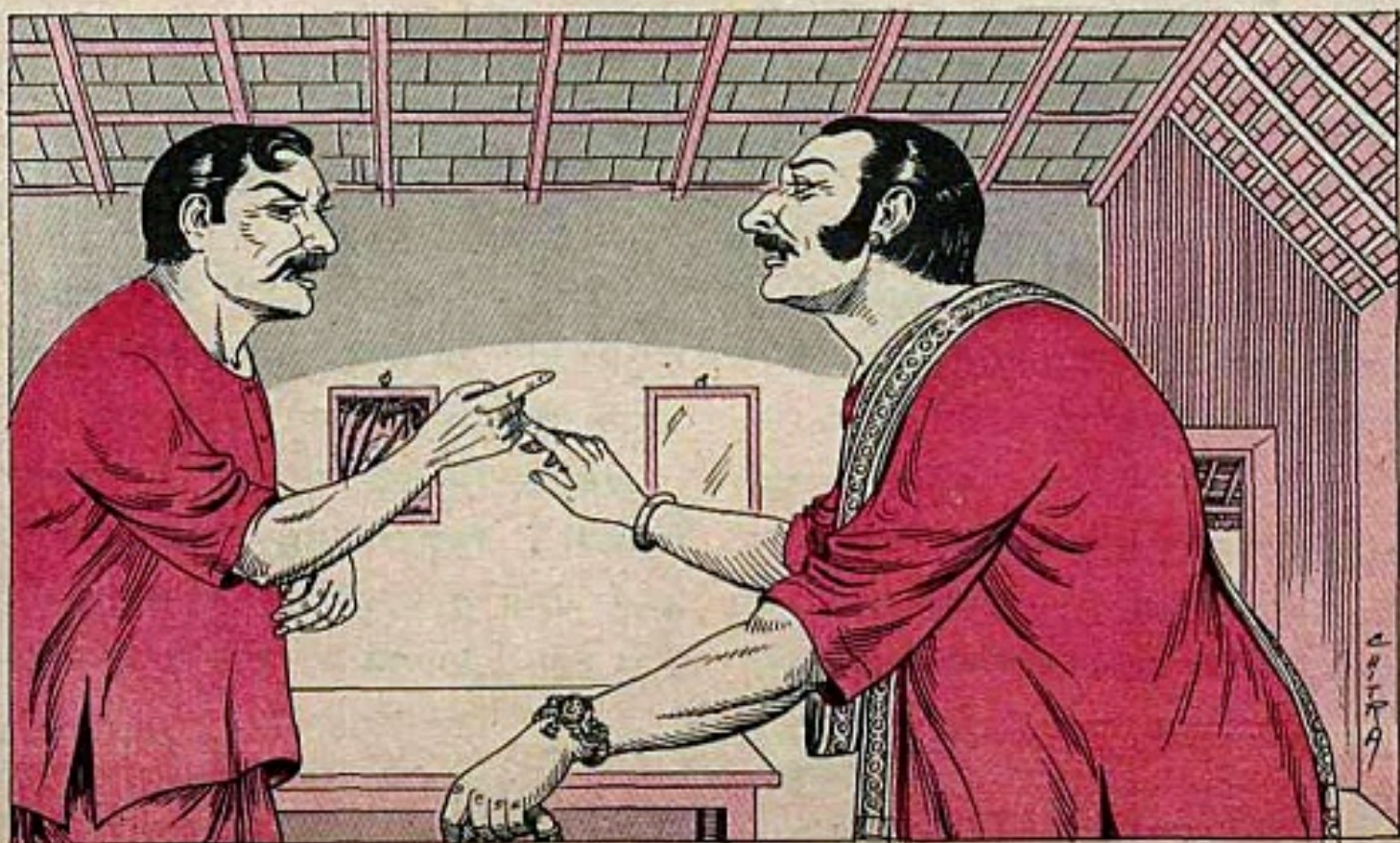
रहती ।" इन शब्दों के साथ गोविंदराज पछताने लगा ।

इसके बाद गोविंदराज ने निश्चय कर लिया कि किसी न किसी तरह उस भिखारी को पकड़ लाकर उसे भर पेट खिलाना चाहिए और उसके आशीर्वाद से कुबड़ी को ठीक करवाना चाहिए ।

उसी दिन सारा गाँव छान कर गोविंदराज ने उस भिखमंगे को पकड़ लिया । बड़ी विनय के साथ उसे अपने घर बुला लाया । पास बैठाकर उसे बढ़िया पकवान खिलाया।

भिखारी भोजन समाप्त कर बोला– "भगवान की कृपा से आपकी कुबड़ी जाती रहे ।" यह आशीर्वाद दे चला गया ।

गोविंदराज को लगा, मानों उसकी कुबड़ी जाती रही है । दूसरे रिन सवेरे उठते ही उसने सोचा कि उसे सब की भांति सीधे खड़े होना चाहिए ।

मगर गोविंदराज की इच्छा पूरी नहीं हुई बल्कि उसे लगा कि उसकी कमर और झुक गयी है ।

वह गुस्से में आँखें पाये हुए व्यक्ति के घर पहुँचा और बोला–"तुम्हारी बातों में आकर मैं धोखा खा गया हूँ । उस भिखारी को तुम से भी बढ़िया पकवान खिलाया । जाते हुए उसने मुझे आशीर्वाद भी दिया, मगर मेरी कुबड़ी जैसी की तैसी है ।"

आँखें पाये हुए आदमी ने हँसकर कहा– "तुम तो मूर्ख हो! भिखारी कोई भगवान नहीं, मैंने उसके भूखे पेट को खाना दिया । इसलिए भिखारी ने हृदयपूर्वक मुझे आशीर्वाद दिया । ईश्वर ने उसके आशीर्वाद को सत्य बनाया । तुमने भरे पेट को खाना खिलाया । यह भी स्वार्थ से प्रेरित होकर किया । भिखारी शिष्टता वश आशीर्वाद दे चला गया । पर उसके आशीर्वाद को कौन सत्या बना दे ?"

इन शब्दों को सुनने पर गोविंदराज के मन में ज्ञानोदय हुआ । उस दिन से वह पीड़ितों की सहायता करके यशस्वी बना ।
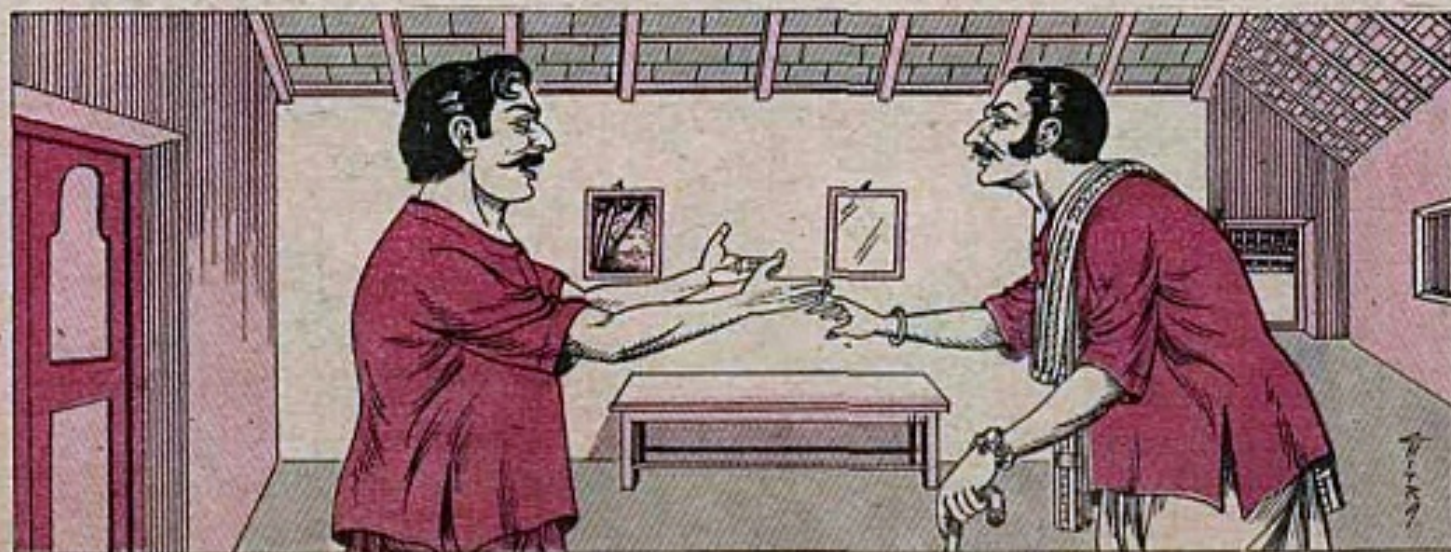
जैसा भेष, वैसी चाल

एक गाँव में एक बहुरूपिया था। वह हर साल दशहरे के दिनों में तरह-तरह के वेश धरकर पैसे कमाता था।

एक दिन वह योगी का वेष धरकर राजा के दरबार में गया। राजा के दर्शन करके उपदेश दिये। राजा ने खुश होकर उसे इनाम देने का खजांची को आदेश दिया।

इस पर उसने कहा–"हम तो योगी हैं। हमारे लिए धन की क्या आवश्यकता है?" यें शब्द कहते इनाम लिये बिना चला गया।

दूसरे दिन वह वेश्या का वेष धरकर दरबार में पहुँचा। नाच-गाकर राजा को प्रसन्न किया।

राजा ने इस बार भी उसे पुरस्कार दिलाया।

"महाराज, थोड़ा और अच्छा पुरस्कार दिलाइये।" बहुरूपिये ने पूछा।

राजा ने आश्चर्य में आकर कहा–"अरे, तुमने कल पुरस्कार लेने से इनकार किया, आज ज्यादा क्यों माँगते हो?"

"महाराज, जैसा भेष, वैसी चाल होनी चाहिये न?" बहुरूपिये ने कहा।
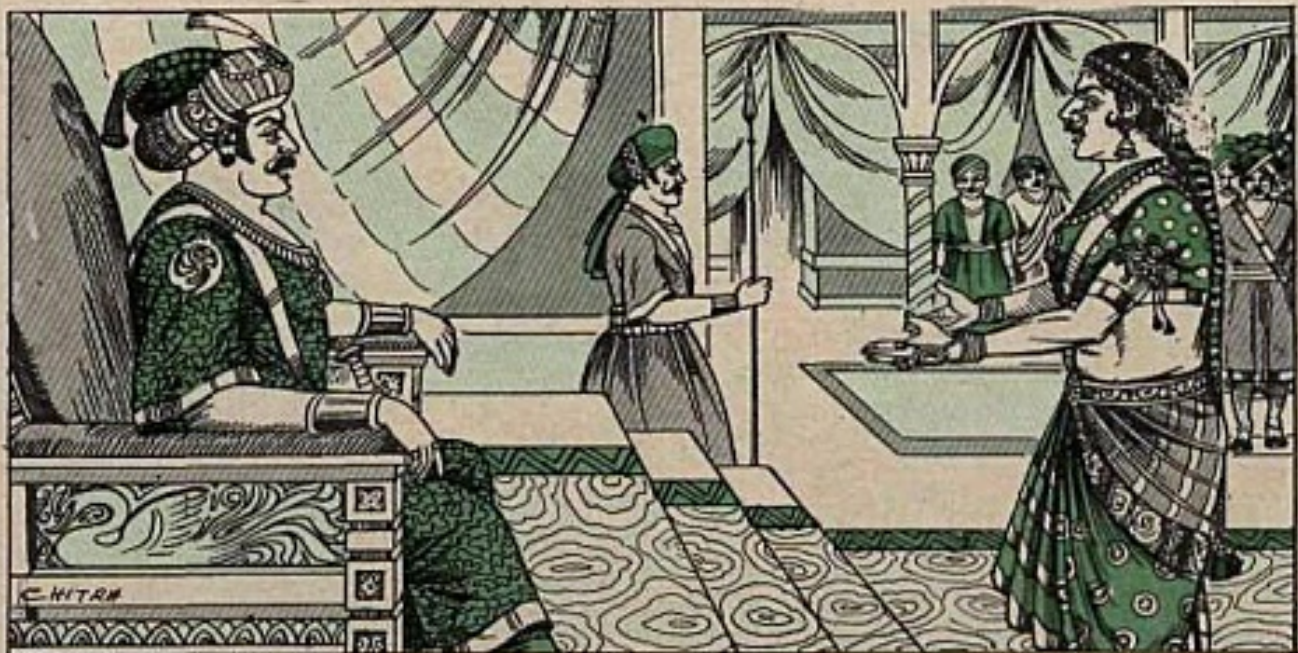
पुराने जमाने की बात है। बस्त्रा नगर पर खुसरो नामक सुलतान राज्य करता था। उसके दरबार में अब्दुल नामक एक युवक था। अब्दुल अनाथ था। खुसरो ने उसे घोड़ों की देखभाल करने की जिम्मेदारी सौंप दी। अब्दुल सुलतान के घोड़ों की देखभाल अच्छी तरह से करता था, मगर यह अफ़वाह फैल गयी कि वह घोड़ों के दाने के खर्च में थोड़ा-बहुत बचा रहा है।

यह खबर खुसरो के कानों में भी पड़ी। उसने अब्दुल को बुलाकर पूछा– "हमने सुना है कि तुम घोड़ों के दाने के खर्च में से थोड़ा हिस्सा हड़प रहे हो! क्या यह सच है?"

अब्दुल जवाब देने से हिचकिचाया।

उसी दिन खुसरो ने अब्दुल की नौकरी बदल दी। उसे सौ सिपाहियों को तनख्वाह देकर रसीद लेने का काम सौंपा गया। अब्दुल का बर्ताव जानने के लिए खुसरो ने उसे यह काम सौंपा था। मगर अब्दुल यह बात जानता न था।

इस नये काम में भी अब्दुल घूस लेने लगा। वह सिपाहियों को पूरी तनख्वाह न देकर उसमें से थोड़े सिक्के बचा लेता था। यह बात भी जल्दी प्रकट हो गयी।

अब खुसरो ने निश्चय किया कि उसे धन से संबंधित कोई काम न दे, इसलिए उसे फुलवारी की रक्षा करने का काम सौंपा। उसके अधीन दस माली काम करते थे।

दो महीने तक अब्दुल के प्रति कोई शिकायत न आयी।

एक दिन खुसरो का छोटा लड़का बगीचे में खेल रहा था। उसने गेंद को जोर से लात मारी। वह अब्दुल को जा

जयंत कुमार

लगी। अब्दुल एक दम नीचे गिर पड़ा। लड़का घबरा गया। उसने अब्दुल के पास जाकर झकझोर कर देखा।

अब्दुल ने धीरे से आँखें खोलकर कहा–"ठहर जा, मैं यह बात अभी जाकर सुलतान से कह दूंगा।"

सुलतान का लड़का एक दम कांप उठा। वह अपने बाप के नाम से डरता था। इसलिए वह अब्दुल से गिड़गिड़ाने लगा कि वह यह बात उसके बाप से न कहे। अब्दुल उस लड़के के गले की मोतियों की माला की ओर एकटक देखने लगा। लड़के ने सोचा कि वह माला अब्दुल को देकर उसके साथ समझौता कर ले। अब्दुल ने चुपचाप लड़के के हाथ से माला ले ली। उस दिन से लेकर सुलतान का छोटा लड़का पैसे और सोने की छोटी-मोटी चीज़ें अब्दुल को देता गया।

यह बात मालियों को मालूम हो गयी। उन लोगों ने अब्दुल को धमकाया कि यह बात वे सुलतान से कह देंगे।

अब्दुल बिलकुल डरा नहीं, उल्टे उसने भी धमकी दी–"मैं सुलतान से शिकायत करूँगा कि सुलतान का लड़का मुझे जो इनाम देता है, उसमें तुम लोग हिस्सा मांगते हो।"

माली सब घबरा गये। यह बात जानकर अब्दुल ने उन्हें बताया कि वे लोग हर महीने उसे दो सिक्के दिया करें तो वह सुलतान से शिकायत नहीं करेगा।

मालियों ने लाचार होकर हर महीने दो सिक्के देने से मान लिया। मगर सुलतान की बीबी ने भांप लिया कि उसके लड़के के आभूषण धीरे-धीरे गायब होते जा रहे हैं। लड़के को डांटने पर उसने डर के मारे सारी बातें बता दीं।

यह खबर भी खुसरो तक पहुँची। मालियों ने गवाही दी कि अब्दुल सुलतान के बेटे से आभूषण, सिक्के वगैरह लेता है। खुसरो ने अब्दुल को दरबार से निकाल दिया और कहा–"तुम अइंदा मुझे अपना चेहरा मत दिखाओ।"

अब्दुल दरबार से चला गया। तीन दिन बाद उसने क़िले के बाहर प्रधान फाटक के पास आसन जमाया। उसने अपने सामने दो-चार बही-खाते रख लिये। वह सुबह से लेकर जो भी देखता व सुनता, उसे उस बही में दर्ज करता गया। क़िले में कब कौन जाता है, कौन बाहर आता है, उनके साथ क्या क्या माल है, ये सब ब्यौरे लिखता गया। आखिर कहीं गधा रेंक बैठता तो उसे भी दर्ज कर देता। लोग उसका यह रवैया देख हँस पड़ते। अब्दुल का यह व्यवहार सुनकर खुद सुलतान भी हँसे बिना रह न पाया। सब ने सोचा कि अब्दुल पागल हो गया है।

कुछ महीने और बीत गये। एक दिन आधी रात के वक़्त अब्दुल अपनी जगह बैठे ऊँघ रहा था। इतने में क़िले की

उत्तरी दिशा के कंदक के पानी में किन्हीं भारी चीज़ों के तीन बार गिरने की आवाज़ हुई। अब्दुल ने झट बही निकाल कर लिख दिया–"उत्तरी कंदक में तीन धम्!"

बात यह थी कि उसके पहले दिन कोई त्योहार था, इसलिए पहरेदार सब खूब शराब पीकर सो गये थे। उस रात को तीन डाकुओं ने क़िले में प्रवेश करके खज़ाने को लूटा। तीन बड़ी बड़ी पेटियों में सोने व चांदी के सिक्के भरकर कंदक के पास लाये और उसमें डाल दिया। रात के वक़्त कंदक पर का पुल उठाया रहता है। कंदक बड़ा चौड़ा और गहरा था, इसलिए डाकुओं को रात में उसे पार करना नामुमकिन था। डाकुओं ने सोचा कि मौक़ा मिलते ही कंदक से पेटियाँ ले जा सकते हैं।

सवेरे खज़ाने के लूटने का समाचार सारे शहर में फैल गया। बड़ी खोज-खबर हुई, पर चोर का पता न लगा।

सुलतान के एक सलाहकार ने बताया–"हुज़ूर! अब्दुल रात-दिन क़िले के बाहर दर्वाज़े के पास लगातार बैठा रहता है। हम पता लगायेंगे कि कहीं उसने अपनी बही में चोरी की बाबत कुछ दर्ज किया हो।"

खुसरो ने अब्दुल को बही लाने का आदेश दिया। अब्दुल ने चोरी गयी रात को अपनी बही में लिख रखा था–"उत्तरी कंदक में तीन धम्?"

खुसरो की समझ में न आया। उसने अब्दुल से पूछा–"ये तीन धम् क्या हैं?"

"हुज़ूर! पानी में भारी चीज़ के गिरने पर धम् की आवाज़ होती है न! ऐसी आवाज़ें तीन बार मुझे सुनायी दीं।" अब्दुल ने कहा।

तुरंत सिपाहियों ने कंदक में उतरकर खोज की तो तीन भारी पेटियाँ मिल गयीं। उनमें खोया हुआ सारा धन सुरक्षित था। इस पर खुसरो बड़ा खुश हुआ और उसने अब्दुल को अपने सलाहकार नियुक्त किया।

प्रारब्ध
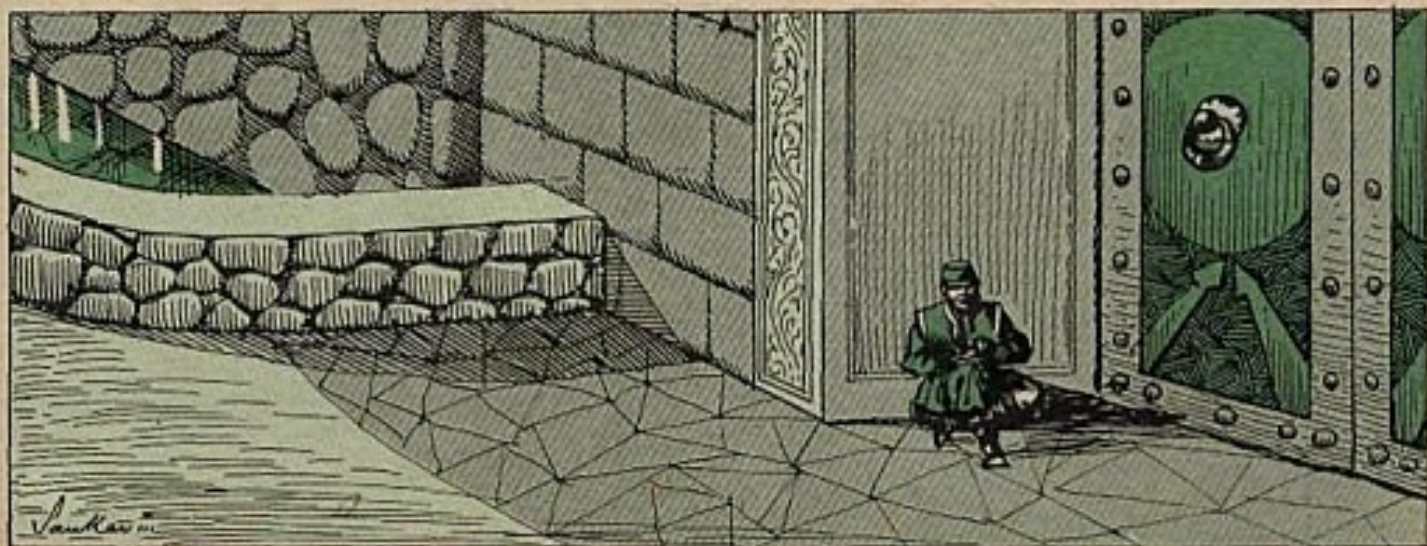
विजयवर्मा एक छोटे से देश का राजा था। उसके विजया नामक एर पुत्री थी। विजया जब सोलह साल की हुई उस दिन राजा ने उसे एक अच्छी अंगूठी भेंट दी। वह अंगूठी क़ीमती न थी, पर राजा के लिए प्यारी थी। क्योंकि वह अंगूठी विजया की माँ की थी। विजया की माँ कुछ समय पहले मर गयी थी।

एक दिन विजया अपनी दासी के साथ नाव पर नदी में विहार करने चली गयी। नाव पर जाते विजया पानी से खेलने लगी। उस वक़्त उसकी अंगूठी उंगली से फिसल कर पानी में गिर गयी।

विजया चिल्ला पड़ी। नाविक ने पानी में उतर कर बड़ी देर तक अंगूठी की खोज की पर अंगूठी नहीं मिली। विजयवर्मा वैसे कठिन स्वभाव का नहीं मगर वह विजया को अंगूठी खो देने पर क्षमा नहीं कर पाया।

विजया ने घर लौट कर अंगूठी के खो देने का समाचार अपने पिता को सुनाया। विजयवर्मा को बड़ा क्रोध आया। उसने कहा–"मैंने प्रेम से तुम्हें जो अंगूठी दी, तुमने उसे खो दी, यह अक्षम्य अपराध है। मैं तुम से एक और बात पूछना चाहता था। तुमसे विवाह करने की इच्छा प्रकट करते हुये महेश नामक एक युवक मेरे पास आया था। क्या तुम उसे जानती हो?"

"जी हाँ, पिताजी।" विजया ने कहा।

"क्या तुम उससे प्यार करती हो?" राजा ने फिर पूछा।

"जी हाँ, पिताजी।" विजया ने कहा।

"यह तो तुम्हारा दुर्भाग्य है। वह तुम्हारे लिए योग्य पति मालूम नहीं होता। मैंने उसे साफ़ बताया दिया कि तुम्हारे साथ उसका विवाह कभी नहीं हो सकता। तुमने मेरी प्यारी अंगूठी को खो दिया।

सुषमा ओब्राय

मैंने तुम्हारे लिए प्यारे व्यक्ति को भेज दिया। पर इससे तुम्हारी शादी रुक नहीं सकती। मैं यह ढ़िढ़ोरा पिटवाने जा रहा हूँ कि जो मेरी प्यारी अंगुठी ला देगा, उसके साथ तुम्हारा विवाह करूँगा।" विजयवर्मा ने कहा।

ढिंढोरा सुनकर कई युवक आगे आये और नदी में उतर कर अंगूठी के वास्ते खोज करने लगे। लेकिन किसी को भी अंगूठी नहीं मिली। इस प्रतियोगिता में विजया से प्यार करने वाले महेश ने भाग नहीं लिया। जब राजा ने उससे कहा कि विजया के साथ उसकी शादी कभी नहीं हो सकती, तब से वह विरक्त हो गया था।

एक दिन वह नदी के उस पार शिकार खेलने के ख़्याल से धनुष और बाण लेकर जा पहुँचा। अचानक उसे नदी के उस पार एक हिरण दिखाई दिया। उसने निशाना बांध कर हिरण पर बाण चलाया। ठीक उसी वक़्त एक बड़ी मछली पानी पर उछल पड़ी। महेश का बाण मछली को जा लगा। वह बड़ी आवाज़ करते पानी में गिर गयी। यह आवाज़ सुन कर हिरण ने सर उठा कर महेश की ओर देखा। वह दूसरा बाण लेकर निशाना साधने ही वाला था कि हिरण भाग कर पेड़ों के बीच गायब हो गया।

"हिरण को मारने चला, तो मछली हाथ लगी।" यह सोचते महेश मछली को पानी में से निकाल कर घर ले गया।

महेश की माँ ने मछली को काटा तो उसके पेट में से अंगूठी निकली। वह विजया की खोई हुई अंगूठी थी। मछली उसे निगल गयी थी, इसलिए वह किसी को नहीं मिली।

महेश ने उस अंगूठी को दूसरे दिन राजा के हाथ सौंप दिया। विजयवर्मा महेश के साथ विजया का विवाह करना नहीं चाहता था, मगर अपने वचन का पालन करने के हेतु उसने विजया का विवाह महेश के साथ किया। विजया का प्रारब्ध बली था, अगर वह अंगूठी न खो देती तो उसका विवाह उसके प्रेमी महेश के साथ न होता।
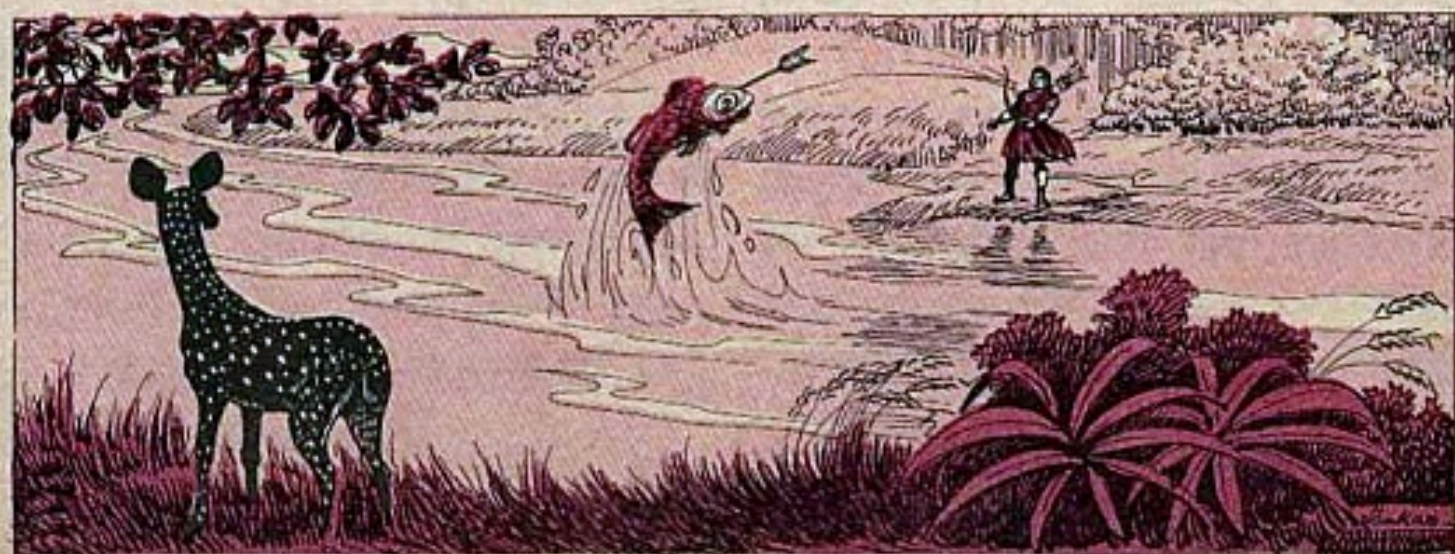
भूतों का घर

एक गाँव में एक ब्राह्मण था। वह एक कथावाचक था। पुराण आदि सुनाने में वह बहुत ही प्रसिद्ध था। इसलिए दूर दूर के गाँवों से बराबर उसे बुलावा आता था।

एक दिन दस मील की दूरी से उस ब्राह्मण को बुलावा आया। उस रात को उसे पुराण सुनाना था। वह वक़्त पर घर से निकल पड़ा, अंधेरा होने के पहले ही वह उस गाँव में पहुँच सकता था। मगर अचानक बादल घुमड़ आये, एक घंटा पहले ही अंधेरा छा गया। थोड़ी देर बाद पानी भी बरसने लगा।

उस अंधेरे में ब्राह्मण को ठीक से रास्ता दिखाई न दिया। अब उस गाँव में वक़्त पर पहुँच जाने की आशा छोड पड़ोसी गाँव में अपने जान-पहचान के लोगों के घर में उसने वह रात बितानी चाही।

इस विचार से वह आगे बढ़ा। बहुत दूर चलने पर भी उसे पड़ोसी गाँव का पता न चला। उसने अनुमान लगाया कि वह रास्ता भटक गया है। कहाँ जाना है, और कहाँ रात बितानी है, ब्राह्मण की समझ में न आया। घबराये हुए उसने चारों ओर नज़र दौड़ायी। एक दिशा में उसे दिये की रोशनी दिखाई दी।

ब्राह्मण की जान में जान आ गयी। उस रोशनी की दिशा में जाकर वह एक घर के सामने पहुँचा। बड़ी देर तक दर्वाज़ा खटखटाने पर एक आदमी ने किवाड़ खोल कर पूछा—"आप तो भीग गये हैं। अन्दर आ जाइये।"

ब्राह्मण भीतर चला गया। घर देखने में पुराना लगता था। चौखट पर नक्काशी की गयी थी। मगर उस घर में रहने वाले पति-पत्नी साधारण दिखाई दिये।

दिनेश मेहता

घर के मालिक ने ब्राह्मण के विचार को भांप लिया और कहा–"घर तो बड़ा जरूर है, लेकिन इसमें कोई निवास नहीं करता, इसलिए हमें यह मकान बिना किराये के मिल गया है। हम सोने जा रहे हैं। आप छत पर के कमरे में आराम कर सकते हैं।"

ब्राह्मण छत पर चला गया। अपने भीगे कपड़े उतार कर हिरण के चमड़े की बनी थैली में से सूखे कपड़े निकाल कर पहन लिया और खाट पर लेट गया। वह थककर शिथिल हो गया था, इसलिए उसे जल्दी नींद आ गयी, मगर थोड़ी देर बाद भूख लगने से उसकी नींद खुल गयी। नीचे कोई आहट हो रही थी। रसोई बनने की गंध आ गयी जिससे ब्राह्मण की भूख और बढ़ गयी।

लगता था कि घर में लोगों की बड़ी भीड़ लगी है। ब्राह्मण सोच ही रहा था कि संकोच किये बिना नीचे जाकर उनके साथ खाना खा ले तभी उसे नीचे से पुकार सुनाई दी–"अजी शंभुदास, खाने के लिए नीचे उतर आओ।"

ब्राह्मण का नाम शंभुदास न था। फिर भी वह जल्दी जल्दी सीढ़ियाँ उतर कर नीचे गया। नीचे बैठक में काफी संख्या में औरत और मर्द इधर-उधर घूम रहे थे। एक ओर पत्तल परोसे गये थे। खाना परोसा जा रहा था। कुछ लोग पत्तलों के आगे जाकर बैठ रहे थे।

ब्राह्मण भी एक पत्तल के आगे जा बैठा। उसे संध्यावंदन की याद आ गयी। जल्दी संध्यावंदन समाप्त करने के ख्याल से ब्राह्मण ने हाथ में जल लिया और उच्च स्वर में कहा–"उत्तिष्ठंतु भूत पिशाचा:" ये शब्द कहते उसने पानी आगे छिड़क दिया।

दूसरे ही क्षण सभी लोग गायब हो गये। पत्तल और परोसे गये पदार्थ भी गायब थे। एक उजड़े अंधेरे भरे घर में घबराया हुआ वह ब्राह्मण अकेला रह गया था।
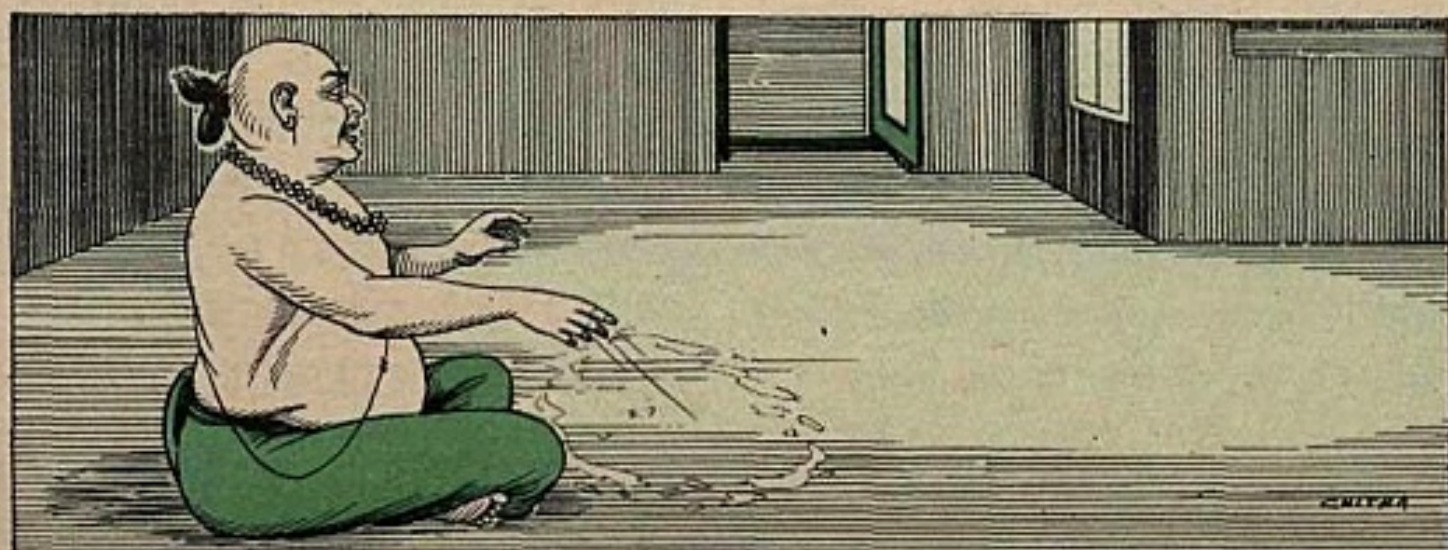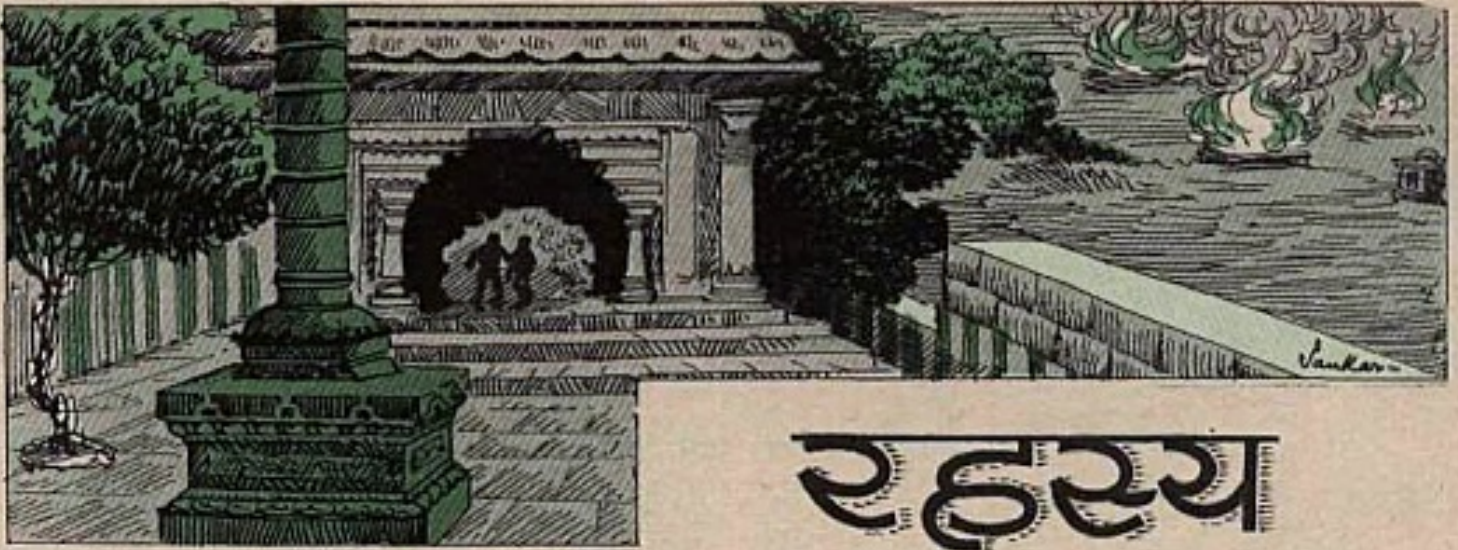
रहस्य

एक गाँव में दो चोर रहा करते थे, मगर वे कभी अपने गाँव में चोरी नहीं करते थे। अड़ोस-पड़ोस गाँवों में जाकर चोरी किया करते थे। उनमें एक का नाम रामभरोसा था, जो चोरी करने में निपुण था। दूसरा गोपालदास था जो आँख मूंदकर रामभरोसे के आदेश का पालन करता था।

एक दिन की रात को वे दोनों पड़ोसी गाँव में एक बकरी को चुराने के लिए चल पड़े। आधी रात के क़रीब वे दोनों श्मशान के बाजू में स्थित एक शिवमंदिर में पहुँचे। रामभरोसे ने गोपालदास को ध्वजस्तम्भ की आड़ में बिठाया और वह बकरे को उठा लेने चला गया।

घना अंधेरा था। सुनसान रात थी। गोपालदास अपने साथ मूंगफली ले गया था। यूँ ही बैठकर वह ऊब गया, अपनी पोटली खोलकर मूंगफली के छिलके दांतों से निकालकर बीज खाने लगा।

शिवमंदिर का नौकर मण्डप पर लेटकर सो रहा था। अचानक उसकी आँखें खुलीं। उसे कट् कट् की आवाज सुनाई दी। उसने सुन रखा था कि रात के वक़्त श्मशान में भूतों का संचार होता है। उसका विश्वास था कि भूत केवल श्मशान में रहते हैं और गड़े मुर्दों को उखाड़कर खाते हैं। उसने कभी नहीं सोचा था कि भूत मंदिर में आकर हड्डियां चबायेंगे।

मंदिर में अगर भूत प्रवेश करते हैं तो उन्हें भगाने का काम पुजारी का था। यह सोचकर नौकर मण्डप से उतरा। सीधे पुजारी के घर पहुँचकर दर्वाजा खटखटाया। पुजारी को जगाकर बोला— "महाराज, श्मशान में रहनेवाले भूत मंदिर में प्रवेश करके मुर्दों को खा रहे

राकेश चौधरी

हैं। आप उन्हें भगा दीजिये, वरना मंदिर अपवित्र हो जायगा।"

पुजारी बड़े भारी भरकम शरीरवाला आदमी था। उसे जोड़ों में दर्द था। रात के वक़्त तो यह दर्द और ज़्यादा हो जाता था। एक क़दम रखना भी उसके लिए मुश्किल था।

"अबे, मैं बिलकुल चल नहीं सकता, क्या करे?" पुजारी ने कहा।

"आपको चलना ही होगा। चल नहीं सकते तो मेरे कंधों पर बैठ जाइये। मैं उठा ले जाऊँगा।" नौकर ने जवाब दिया।

लाचार होकर पुजारी नौकर के कंधों पर बैठ गया।

इस बीच गोपालदास ने सारी मूँगफली खा डाली। किसी के आने की आहट पाकर ध्वजस्तम्भ के बाजू में से उसने झांककर देखा। किसी को अपने कंधों पर एक भारी आदमी को उठा लाते उसने देखा।

गोपालदास ने सोचा कि वह आनेवाला व्यक्ति रामभरोसे है। उसने कहा–"अरे खूब मोटा तगड़ा है न?"

यह बात सुनते ही मंदिर के नौकर का दिल तेजी से धड़कने लगा। उसने पुजारी को झट नीचे पटक दिया और भाग गया।

पुजारी को भी जोड़ों के दर्द का भान न हुआ। वह भी बेतहाशा भाग खड़ा हुआ और घर में पहुँचकर किवाड़ बंद किये।

इसके थोड़ी देर बाद रामभरोसे एक छोटे से बकरे को उठा लाया और गोपालदास के साथ अपने गाँव चला गया।

दूसरे दिन सवेरे मंदिर की सफ़ाई करते नौकर ने ध्वजस्तम्भ के पास मूँगफली के छिलके देखे। तब उसकी समझ में आया कि पिछली रात को कट् कट् की आवाज़ क्यों हुई? उसने यह खबर सिर्फ़ पुजारी को सुनायी। वह रहस्य केवल पुजारी और नौकर मात्र जान गये। बाक़ी किसी को कुछ पता न चला।

अक़्लमंद औरत

एक गाँव में धनिया नामक एक अधेड़ उम्र की विधवा थी। वह अपने घर के चबूतरे पर छोटी सी दूकान खोलकर गुजारा करती थी। वह गरीब थी, पर गाँव में यह अफवाह फैल गयी कि उसकी पेटी में सोने के गहने और रुपये भरे पड़े हैं। आसपास के गाँवों में अक्सर चोरियाँ हुआ करती थीं। धनिया के गाँव में भी एक दो बार चोरी हो गयी थी।

गाँव में इस बात को लेकर हलचल मच गयी। गाँव के नौ जवानों ने चोरों को पकड़ने का बीड़ा उठाया। गाँव के मुखिये ने ढिंढोरा पिटवाया कि जो चोरों को पकड़वा देगा, उसे अच्छा इनाम दिया जायगा। पड़ोसी गाँव में रहनेवाले चोर को इस बात का बिलकुल पता न था।

धनिया ने सोचा कि अगर चोर उसके घर में घुसे तो क्या करे? सोच-समझकर आखिर वह एक निर्णय पर पहुँची। उसने यह भी सोचा कि अगर उसकी युक्ति सफल निकली तो इनाम भी उसे मिल जायगा। इसलिए जब गाँव के सब लोग यह सोचकर डर रहे थे कि कहीं चोर उनके घरों में न घुसे, तब धनिया चोरों का बड़ी आतुरता के साथ इंतज़ार करने लगी।

एक दिन की रात को चोर धनिया के घर में घुस आया। धनिया उस वक़्त जाग रही थी। चोर की आहट पाकर उसने धीरे से कहा–"तुम आ गये, बेटा!"

चोर एकदम चकित हो मौन रह गया।

"तुम अपने रुपये ले जाओगे? अब तक तुम्हारे रुपये दुगुने हो गये होंगे! गिन के देख लो।" धनिया ने फिर कहा।

चोर की समझ में न आया कि धनिया क्या कह रही है! उसने सोचा कि शायद

गौरीशंकर मिश्र

यह औरत पगली होगी । धनिया खाट पर से उठ खड़ी हुई, दिया जलाते हुए बोली– "कल भी तुम आये थे न! बेटा, तुम वही आदमी हो न! तुम तो मेरी पेटी का रहस्य सबसे कहते-फिरते हो । ऐसी बात हो तो गाँव के बुजुर्ग मेरी जान ले लेंगे ।"

चोर भाग जाना चाहता था, मगर उसने सोचा कि इस औरत के जरिये उसका कोई खतरा न होगा । अलावा इसके उस औरत की बातों का मर्म समझने के लिए वह वहीं रह गया ।

दिये की रोशनी में चोर को देख धनिया बोली–"और क्या, तुम तो मामूली चोर नहीं हो । तुम्हें उसने मेरी पेटी का रहस्य बताया होगा!"

"मुझे किसी ने नहीं बताया । वह रहस्य क्या है?" चोर ने पूछा ।

"दिखा देती हूँ ।" यह कहते हुए धनिया ने लकड़ी का बक्स खोलकर गहने और रुपये निकाले, उनका हिसाब करके बताया–"देखते हो न? कल हमारे चोर ने इस बक्स में जो कुछ रखा, वह दुगुना हो गया है । आज रात को इसे ले जाने की बात कही उसने । न मालूम क्यों वह आया नहीं । मैंने सोचा कि तुम्हीं वह आदमी हो और उसका रहस्य खोल दिया । एक-दो चोर मेरे घर आते-जाते रहेंगे तो गाँव के अधिकारियों को मालूम हो जायगा । मुझे फाँसी पर लटकवा देंगे । बेटा, तुम्हारा पुन्न होगा । तुम

किसी से यह बात न कहो। तुम अपने रास्ते चले जाओ। मेरे बक्स की मेहरबानी से वह चोर छोटी-मोटी चोरियाँ करके आराम से जी रहा है। मुझे भी थोड़ा-बहुत हिस्सा मिल जाता है। इसलिए इस रहस्य को तुम गुप्त रखो।"

चोर का लोभ जाग उठा। उसने धनिया से कहा—"चाचीजी, मेरा भी धन दुगुना कर दोगी तो तुम्हें हिस्सा दूंगा। मैं तुम्हारे रहस्य को गुप्त रखूंगा। कल रात को लौटकर मैं अपना सारा धन तुम्हारे बक्स में रख दूंगा। उसे दुगुना बनाकर दो। मैं देखूंगा कि तुम्हें किसी प्रकार का खतरा न हो।"

"बेटा, न मालूम तुम कैसे आदमी हो? इस गाँव के भी नहीं हो! गाँव के लोग चोरों को पकड़ने के लिए बड़ी खोज कर रहे हैं। तुम ज़ोर देते हो, इसलिए मैं तुम्हें एक बार अपने बक्से को इस्तेमाल करने देती हूँ। इसके बाद हमारा-तुम्हारा कोई वास्ता न होगा। समझें! तुम कल रात को ठीक इसी वक़्त आ जाओ।" धनिया ने समझाया।

चोर खुशी खुशी चला गया।

सवेरा होते ही धनिया ने गाँव के मुखिये को सारा समाचार सुनाया। अपने घर चोर को रंगे हाथ पकड़ने के लिए सारे इंतजाम करने की सलाह दी।

चोर बड़ा लोभी था। वह अब तक लूटे हुए अपने सारे गहने व रुपये लाकर अर्ध रात्रि के समय धनिया के घर पकड़ा गया।

दूसरे दिन गाँव के मुखिये ने चोरी के माल की सूची बनायी। सब लोगों से पता लगवाया कि किनके घर क्या क्या चोरी गया है, उन्हें उनका माल वापस दिलाया और धनिये को बढ़िया इनाम दिलाया।

चोर को जेल की सजा सुना दी गयी। उस दिन से अड़ोस-पड़ोस के गाँवों में भी चोरियाँ बंद हो गयीं।

विदूषक का दाँव

एक राजा को घोड़ों की बाजी बड़ी पसंद थी। अक्सर वह घोड़ों को दौड़ाकर जो प्रथम आता, उसे पुरस्कार देता था।

एक बार विदूषक ने राजा से कहा–"महाराज, इस बार आप उस घोड़े को पुरस्कार दीजिये जो सबसे पीछे आवे। यह बाजी देखने लायक़ होगी।"

"तब तो घोड़े ठीक से दौड़ेंगे नहीं, इसमें मजा क्या आवेगा?" राजा ने कहा।

"ऐसी बात नहीं, महाराज! घोड़ों को दौड़ाने की जिम्मेदारी मेरी होगी।" विदूषक ने कहा। राजा ने दो सवारों को बुलाकर कहा–"तुम दोनों अपने घोड़ों को दौड़ाओ, जो पीछे आवेगा, उस घोड़े को मैं पुरस्कार दूँगा।" इसके बाद विदूषक ने उन सवारों के कानों में कुछ कहकर भेज दिया।

कुछ ही क्षणों में दोनों आदमी घोड़ों पर सवार हो राजा के सामने आये। राजा ने कहा–"तुम लोग अमुक पेड़ तक जाकर लौट आओ।"

दोनों घोड़े बड़ी तेजी से निकल पड़े। पेड़ के पास पहुँचकर फिर वापस लौटने लगे।

राजा ने आश्चर्य में आकर विदूषक से पूछा–"तुमने उन सवारों से क्या कहा?" "महाराज, मैंने उन्हें घोड़े बदलने को कहा।" विदूषक ने उत्तर दिया।

तीन ख़तरे

एक गाँव में एक धनी किसान था। उस के यहाँ एक नौकर था जो खेती का काम देखता था। नौकर के एक लड़का था। वह बड़ा फुर्तीला था। किसान हर शुक्रवार को मक्खन बिलोया गया मट्ठा उस लड़के को दिलवाता था। वह लड़का शुक्रवार की हाट में ले जाकर उसे बेच देता और थोड़े पैसे बना लेता था। इस वजह से लोग उसे–"मट्ठावाला छोकरा" पुकारते थे। उसका असली नाम कम लोग जानते थे।

हर शुक्रवार को जो हाट लगती, उसमें से सामान लाने गोविंद गाड़ी हांक ले जाता था। मट्ठावाला छोकरा उसी गाड़ी में अपनी छाछ की हंडी रख कर हाट में जाता और उसी गाड़ी में घर लौट आता था।

एक दिन वह हाट में छाछ बेच रहा था, तब एक लंबी बूढ़ी ने आकर छाछ मांगी।

"एक गिलास का दाम छवन्नी। आधे गिलास का दाम दुअन्नी। कितने की दूं?" छोकरे ने पूछा।

"हरें छवन्नी नहीं: दुअन्नी नहीं, मुफ़्त में दो।" बूढ़ी ने कहा।

"यह सौदा मेरे पास नहीं फटेगा, चलो चल।" छोकरे ने झिड़क दिया।

बूढ़ी ने निकट आकर हंड़ी उठानी चाही, छोकरे ने कलछी से बूढ़ी के हाथ पर दे मारा। बूढ़ी चली गयी।

शाम तक सारी छाछ बिक गयी। छोकरे ने हंडी व कलछी गोविंद की गाड़ी में रख दी और बोला–"मैं जरा गाँव में घूम कर पैदल चला आऊँगा। तुम जाओ।" गोविंद की गाड़ी चली गयी।

थोड़ी देर तक गाँव का चक्कर लगा कर वह छोकरा अपने गाँव की ओर चल पड़ा। थोड़ी दूर चलने पर उस के पीछे किसी के

व्रजेन्द्र नारायण

चले आने की आहट सुनायी दी। वह घूम कर देखने ही वाला था कि तभी बूढ़ी ने उसके सर पर एक बोरा ढ़क दिया, उसमें उस छोकरे को डाल कर बोरे का मुंह रस्सी से बांध दिया।

इतने में बूढ़ी को एक बात याद आयी। बस्ती में रहने वाली एक रसोइन उसे बढ़िया अचार देने वाली थी। इस बात की याद आते ही बूढ़ी उस बोरे को रास्ते के किनारे छोड़ फिर बस्ती की ओर चल पडी।

छोकरा बोरे में फँस गया था, मगर उस का दिमाग तेजी से काम कर रहा था। थोड़ी देर बाद उस रास्ते से कोई सीठी बजाते आ निकला। छोकरा चिल्ला पड़ा–

"साहब, मुझे इस बोरे से निकालने की मेहर्बानी कीजिये।"

उस आदमी ने बोरे का मूँह खोल कर छोकरे को बाहर निकाला। वह एक सिपाही था। उसने छोकरे के मुंह से सारी कहानी सुनकर बूढी को अच्छा सबक़ सिखानां चाहा। उसने उस बोरे में कांटे-दार झाड़ और मिट्टी भर दी, फिर से बोरे का मुंह बांधकर दोनों अपने रास्ते चले गये।

एकाध घंटे बाद बूढ़ी लौट आयी। बोरा उठा कर घर की ओर चल पड़ी। बोरे के भीतर के कांटे उसे चुभते जा रहे थे।

"अरे बदमाश! सुइयों से मुझे चुभो देते हो। घर चल कर तेरी ख़बर लूँगी।" ये शब्द कहते, छोकरे को गालियाँ देते बूढ़ी अपने घर पहुँची। बोरे का मुंह खोल कर अपने बिस्तर पर उसे लुढ़का दिया। सारा बिस्तर खराब हो गया।

दूसरा शुक्रवार आया। मट्ठावाला छोकरा फिर गोविंद की गाड़ी में हाट की ओर चल पड़ा। मट्ठा बेच कर इस बार गोविंद की गाड़ी में ही निकला। बीच रास्ते में गाड़ीकी धुरी टूट गयी।

"मैं बस्ती में जाकर लुहार से धुरी ठीक करा के लौटता हूँ, तुम यहीं रह जाओ।" यह कह कर गोविंद बस्ती की ओर चला

गया। गाड़ी में बैठे बैठे छोकरा ऊब उठा। इसलिए नीचे उतर कर ठहलने लगा।

अचानक बूढ़ी कहीं से आ निकली और उसके सर पर बोरा डाल कर फिर उसे बांध दिया और घर की ओर चल पड़ी।

आधी दूर जाने पर उस के मन में एक विचार आया। क्यों कि उस रास्ते में एक जगह तरकारी व सब्ज़ी की क्यारियाँ थीं, उस के चारों ओर बाड़ी लगी थी, मगर उस में एक आदमी के घुसने लायक़ छेद थे। बूढ़ी ने उसे देखते ही सोचा कि इस वक़्त कोई देख नहीं रहा है, थोड़ी तरकारियाँ चुरा ले जाऊँगी। यह सोच कर बोरे को वहीं डाल क्यारियों की ओर आगे बढ़ी।

छोकरा इसी बात की चिंता कर रहा था कि कोई उधर से निकले तो क्या ही अच्छा हो। तभी उसके निकट किसी के पैरों की आहट सुनाई दी।" साहब! मुझे बचाइये। आपका पुन्न होगा।"

वह आदमी एक चोर था। उसने बोरे का मुँह खोल दिया। छोकरे को छुड़ा कर असली बात जान ली। उसने भी सोचा कि बूढ़ी को उचित दण्ड देना चाहिये। यह सोच कर उसने गीली मिट्टी और कंकड़ों से बोरे को भर दिया, उस का मुँह बाँध कर दोनों अपने घर चले गये।

बूढ़ी तरकारियाँ चुरा कर लौट आयी। बोरे को पीठ पर लाद कर चलने लगी। उसे कंकड़ चुभने लगे–"अबे छोकरे, तेरे घुटनों से मुझे तंग करते हो!" जैसे तैसे घर पहुँच कर उसने बोरे को बिस्तर पर उंड़ेल दिया तो इस बार भी उसे मलूम हुआ कि वह धोखा खा गयी है।

तीसरा शुक्रवार आया। इस बार गोविंद ज़रा पहले ही चल पड़ा। छोकरा भी बड़ा सावधान था। बूढ़ी अगर हाथ फैला दे तो छुरी मारने केलिए वह अपने साथ एक छुरी भी लेते आया।

आधा रास्ता पार करने के बाद गोविंद ने इमली के पेड़ों वाले एक बगीचे के पास

गाड़ी रोक दी और कहा—"अरे, चलो, इमली चुन ले।"

तब तक अंधेरा फैला न था और उसके पास छुरी भी थी, इसलिए उस छोकरे को डर न लगा।

दोनों इमली के बगीचे में पहुँच कर इमली चुनने लगे। बूढ़ी किसी पेड़ की आड़ में छिपी बैठी थी। उसने अचानक छोकरे के मुँह पर हाथ रखकर बंद किया। बाद को उसे बोरे में बांध कर अपने घर ले गयी।

बूढ़ी ने बोरा उतारा। एक चाकू लाकर पत्थर पर सान धरने लगी। इसी वक़्त उसे लगा कि चूल्हे की आग बुझती जा रही है। चूल्हे पर चढ़े बर्तन का ढक्कन उतार कर देखा तो अभी तक पानी खौल नहीं रहा था। जल्दी लकड़ी डाल न दे तो चूल्हे के बुझ जाने का डर था। घर में लकड़ी चुक गयी थी। इसलिए वह बूढ़ी एक रस्सा लेकर सूखी लकड़ियाँ बीन लाने केलिए जल्दी जल्दी बाहर चली गयी।

दर्वाजे के बंद करने की आवाज़ सुन कर छोकरे ने अपनी छुरी से बोरे को काट दिया और बाहर आया। उसने घर में चारों तरफ़ नज़र दौड़ायी तो उसे मिट्टी के बर्तन, ढक्कन, पुरवे वगैरह दिखाई दिये। छोकरे ने वे सब लाकर बोरे में भर दिये, फिर बोरे को सी दिया। तब दर्वाजा खोलकर बूढ़ी की झोंपड़ी के एक कोने में आग लगा कर भाग गया।

इस बीच बूढ़ी लौट आयी। भीतर कुंड़ी चढ़ा कर चूल्हे में लकड़ी डाल दी। तब बोरे का मुँह खोलकर चाकू हाथ में ले चिल्ला पड़ी—"अबे, अब तू कहाँ जायगा?" उसने बोरा उठाकर उंडेल दिया। उसमें से बर्तन, ढक्कन बड़ी आवाज़ के साथ नीचे गिरकर टूट गये। इस गड़बड़ में बूढ़ी ने अपनी झोंपड़ी के जलने पर ध्यान नहीं दिया। जब उसे मालूम हुआ, तब उसने भागने की बड़ी कोशिश की, फिर भी कोई फ़ायदा न रहा। इसलिए वह भी झोंपड़ी के साथ जलकर राख हो गयी।

महाभारत

दुर्योधन गंधर्वों से पराजित हो युधिष्ठिर के भाइयों के द्वारा मुक्त हुआ। बड़े ही अपमान का अनुभव करते हस्तिनापुर के लिए लौट पड़ा। रास्ते में एक तालाब के पास दल-बल के साथ पड़ाव डाला।

कर्ण पहले ही युद्धक्षेत्र से भाग गया था। वह दुर्योधन से उस पड़ाव के पास जा मिला, मगर वह यह बात नहीं जानता था कि दुर्योधन गंधर्वों के द्वारा बन्दी बना और पांडवों ने उसे छुड़ाया, इसलिए वह कहने लगा—"दुर्योधन, तुम्हारे पराक्रम की प्रशंसा किन शब्दों में करूँ? क्या उन गंधर्वों को हराकर राजधानी को लौट रहे हो? गंधर्व बड़े ही उद्दण्ड हैं। उनके समक्ष मैं ठहर नहीं सका। इसलिए विकर्ण के रथ पर सवार हो मैं भाग गया। अब तक मैं छिपा हुआ था, अभी वहाँ से लौट रहा हूँ। तुम जैसे पराक्रमी इस संसार में दूसरा न होगा।"

कर्ण के द्वारा प्रशंसा सुनकर दुर्योधन का दुख उमड़ पड़ा। उसने काँपते स्वर में सारी कहानी कर्ण को सुनायी और कहा—"अगर मैं युद्ध में विजयी होता तो मुझे यश मिलता, यदि मर जाता तो वीर स्वर्ग को प्राप्त होता। मगर ये दोनों बातें नहीं हुईं। पांडवों ने मेरे प्राण बचाये। इस अपमान को लेकर मैं हस्तिनापुर को लौट नहीं सकता। मैं अपने पिता, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य तथा अश्वत्थामा को अपना मुँह दिखाने लायक़

३४. कर्ण की दिग्विजय

न रहा। ज़िंदगी से मैं ऊब उठा हूँ। मैं यहीं पर अनशन करके मर जाऊँगा। तुम सब हस्तिनापुर को लौट जाओ। दुश्शासन को सिंहासन पर बिठाकर तुम सब शासन करो।" इन शब्दों के साथ दुर्योधन ने दुश्शासन को गले लगाया। वे दोनों रो पड़े।

उन दोनों भाइयों को रोते देख कर्ण खीझते स्वर में बोला–"तुम दोनों रोते ही क्यों हो? रोने से दुख बढ़ता ही जाता है, मगर मानसिक शांति नहीं मिलती। यह सोचकर तुम दुखी क्यों होते हो कि पांडवों ने तुम्हें छुड़ाया? तुम्हारी प्रजा के रूप में तुम्हारी रक्षा करना उनका कर्तव्य था। तुम्हारे सेवक के रूप में उन लोगों ने यह कार्य किया। इसमें अपमान की क्या बात है? तुम प्राण देने की बात कहते हो। यह बात तुम्हारे सामंतों को मालूम हो जायगी तो वे तुमको कायर समझेंगे। तुमने जब पांडवों का राज्य छीन लिया और उन्हें वनवास के लिए भेजा तो क्या उन लोगों ने प्राण दे दिये? इसलिए ऐसे बे मतलब के विचारों को त्याग दो।"

शकुनि ने ताना देते हुए कहा–"क्या मैंने जुए में पांडवों का सारा राज्य जीतकर इसलिए दिया कि तुम उसका उपभोग किये बिना अनशन करके मर जाओ?" किसी की बातें दुर्योधन के कानों में न पड़ीं। उसने वल्कल पहनकर अनशन करना शुरू किया।

देवताओं से हारकर पाताल में निवास करनेवाले दानवों को दुर्योधन के अनशन का समाचार मिला। उन लोगों ने दुर्योधन को अपने पास बुला लाने के लिए अग्नि प्रज्वलित की और अथर्व वेद के मंत्रों का जाप करते, दूध से होम किया। तब अग्नि में से कृत्या नामक एक शक्ति स्वरूपिनी जंभाइयाँ लेते हुए निकल आयी और दानवों के समक्ष खड़े हो पूछा–"बोलो, तुम लोग मुझसे क्या चाहते हो?"

"भूलोक में दुर्योधन अनशन कर रहा है। उसे पाताल में ले आओ।" दानवों ने निवेदन किया। इस पर कृत्या दुर्योधन को पाताल में ले आयी।

दानवों ने दुर्योधन को रात-भर अपने बीच रखा, उसे अनेक प्रकार से समझाया– "दुर्योधन, तुम उत्तम क्षत्रिय हो। तुम्हारे सामंत महान वीर हैं। तुम क्षत्रिय धर्म को त्यागकर अनशन क्यों कर रहे हो? इससे तुम्हें आत्महत्या का पाप लग सकता है। सुख और यश भी तुम्हारे हाथ नहीं लगेंगे। हम सच्ची बात बता रहे हैं, सुनो। ईश्वर का वर पाकर वज्र के समान तुम्हारे शरीर के ऊपरी भाग की तथा लोकमाता का वरदान प्राप्त करके तुम्हारे शरीर के सुंदर निचले भाग की हमने ही सृष्टि की। तुम साधारण मानव नहीं हो, देवता हो। युद्ध में तुम्हारे पक्ष में लड़कर तुम्हारे शत्रुओं का वध करनेवाले सभी लोग हमारे अंश से पैदा हुए हैं। तुम्हारा मित्र कर्ण नरकासुर के अंशवाला है। इसलिए तुम चिंता न करो।" इस प्रकार दानवों ने दुर्योधन को सांत्वना देकर भेज दिया। इसके बाद कृत्या फिर उसे भूलोक में ले आयी और चली गयी।

दुर्योधन ने नींद से जागने पर सोचा कि रात में उसने जो कुछ देखा, वह सपना है। पर उसने इसके संबन्ध में किसी से कुछ नहीं कहा। इस बार कर्ण दुर्योधन के मन को बड़ी आसानी से बदल सका। तब दुर्योधन अपने दल को साथ ले ठाठ से हस्तिनापुर को लौट आया।

भरी सभा में भीष्म ने दुर्योधन को ताना देते हुए कहा–"हमारे मना करने पर भी तुम घोष यात्रा पर चले गये और अपमानित हो लौट आये। युधिष्ठिर ने तुम्हारी इज्जत बचायी और तुम्हारे साथ उदारता के साथ बर्ताव किया। कर्ण की बातों में आकर तुमने ऐसे धर्मात्मा के साथ दुश्मनी मोल ली। तुम जिस कर्ण को अपना मित्र मानते हो, वह

पराक्रम का पता चल जायगा।" कर्ण की बातों को दुर्योधन ने मान लिया।

कर्ण एक भारी सेना लेकर चल पड़ा। पहले उसने द्रुपद को हराकर बहुत सारा धन लिया। इसके बाद उत्तरी दिशा में जाकर अंग, वंग, कलिंग, मगध, मत्स्य, कोसल इत्यादि देशों के राजाओं को हराया और उन सबसे धन एवं उपहार लिये। इसके बाद कर्ण ने दक्षिण देश पर हमला करके उन सबको जीत लिया। कुंडि नगर के राजा रुक्मि जैसे लोगों ने कर्ण के साथ युद्ध किये बिना उनसे मैत्री कर ली। इस प्रकार दिग्विजय करके कुछ समय बाद अपार धन लेकर कर्ण हस्तिनापुर को लौट आया।

दुर्योधन ने कर्ण का अभिनंदन करते हुए कहा—"तुमने मेरी जो सहायता की, वह भीष्म, द्रोण, बाह्लिक इत्यादि अनेक वीर नहीं कर पाये। इस जगत में तुम्हारी समता कर सकनेवाला कोई नहीं है।"

कर्ण के दिग्विजय करने के बाद दुर्योधन के मन में राजसूय याग करने की इच्छा पैदा हुई। इसके लिए आवश्यक सारे प्रबंध उसने किये। ऋत्विजों को बुलाकर पूछा कि वे उसके द्वारा राजसूय याग करवा दे।

परंतु ऋत्विजों ने इस पर आक्षेप करते हुए समझाया—"तुम पांडवों को हराने के

तुमको गंधर्वों के चंगुल में फँसे देख युद्ध क्षेत्र से भाग गया है। अब भी सही, पांडवों के साथ मैत्री करके अपने वंश की रक्षा करो।"

इस पर दुर्योधन ठठा कर हँस पड़ा और कर्ण, शकुनि तथा दुश्शासन को साथ ले सभा भवन से चला गया। भीष्म की बातों से कर्ण लज्जित हुआ। उसने दुर्योधन से कहा—"राजन, मुझे एक बड़ी भारी सेना दे दो। मैं उन सभी राज्यों को जीत कर तुम्हें सौंप दूंगा जिन राज्यों को भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव इन चारों ने मिलकर जीत लिये थे। उस समय इस वृद्ध भीष्म को मेरे

बाद ही राजसूय याग कर सकते हो। अलावा इसके तुम्हारे पिता जीवित हैं। उनके जीवित रहते तुम्हें चक्रवर्ती बनने की योग्यता प्राप्त न होगी। राजसूय याग के समान वैष्णव नामक एक और यज्ञ है। चाहे तो तुम वह यज्ञ कर सकते हो।"

दुर्योधन ने यह बात अपने भाइयों तथा कर्ण और शकुनि से बताई। उन लोगों ने यही सलाह दी कि ऋत्विजों के कहे अनुसार ही करे। इस पर यज्ञ के लिए आवश्यक सारी तैयारियाँ की गयीं। नगर के बाहर यज्ञशाला का निर्माण हुआ। पांडवों को यज्ञ का निमंत्रण देने के लिए दुर्योधन ने एक दूत को भेजा।

युधिष्ठिर ने उस दूत से कहा—"दुर्योधन यज्ञ कर रहा है, यह हमारे लिए प्रसन्नता की बात है। हमें भी उस यज्ञ को देखने की बड़ी इच्छा है। यदि हम इस वक़्त हस्तिनापुर में आयेंगे तो हमारे वनवास की दीक्षा भंग हो जायगी। इसलिए हम किसी भी हालत में नहीं आ सकेंगे।"

इसके बाद भीम ने कहा—"हमारे वनवास एवं अज्ञातवास के पूरा होने पर मेरे भाई युधिष्ठिर दुर्योधन तथा उसके भाइयों को यज्ञ-पशु बनाकर शस्त्रों के साथ बड़ा यज्ञ करने जा रहे हैं। तुम दुर्योधन से कहो कि मैं उस यज्ञ में अवश्य भाग लूंगा।"

दुर्योधन का वैष्णव यज्ञ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कर्ण ने दुर्योधन का अभिनंदन करते हुए कहा—"आगामी युद्ध में मैं पांडवों का वध करके तुम्हारे हाथों से राजसूय यज्ञ कराऊँगा।"

पांडव द्वैतवन में बहुत समय तक रहें, वे शिकार खेलते रहे, इस वज़ह से जंगली जानवरों की संख्या घटती गयी। इस कारण युधिष्ठिर अपने परिवार के साथ फिर काम्यकवन में पहुँचे। वे कंद-मूल और फल खाते अपने दिन काटने लगे।

इस तरह पांडवों के वनवास के ग्यारह साल बीत गये। युधिष्ठिर को इस बात का बड़ा दुख था कि अगर वह जुआ न

खेलता तो क्या ही अच्छा होता। अपने भाइयों तथा द्रौपदी को ये असहनीय कष्ट न होते। भविष्य का विचार करने पर भी उन्हें बड़ा दुख होता था। कर्ण ने दुर्योधन को वचन दिया था कि वह सभी पांडवों को मार डालेगा। इस तरह की चिंताओं से युधिष्ठिर को रात के वक्त बिलकुल नींद न आती थी।

पांडव जब काम्यक वन में थे, तब महर्षि व्यास उन्हें देखने आया। पांडवों को बहुत ही दुर्बल देख महर्षि को बड़ा दुख हुआ। उन्हें सांत्वना देकर अंत में हिम्मत बंधाई कि तेरह वर्ष का समय बीतने पर पांडवों को पुनः राज्य की प्राप्ति होगी। इसके बाद महर्षि चला गया। उधर पांडव जंगलों में नाना प्रकार की यातनाएँ झेल रहे थे, इधर दुर्योधन, कर्ण व शकुनि हमेशा यही विचार किया करते थे कि पांडवों को और कैसे सताये जायें!

उन्हीं दिनों में मुनि दुर्वास अपने दस हज़ार शिष्यों के साथ हस्तिनापुर में आया। दुर्वास स्वभाव से बड़ा क्रोधी है। उसके आतिथ्य में ज़रा भी असावधानी हो जाती है तो वह शाप दे बैठता है। इस डर से दुर्योधन तथा उसके भाइयों ने बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ दुर्वास की सेवा की। विनय का बर्ताव किया। दुर्वास ने भी दुर्योधन की कई प्रकार से परीक्षा ली।

कभी दुर्वास अचानक कह बैठता– "राजन, मुझे बड़ी भूख लगी है। शीघ्र भोजन तैयार करा दो। मैं नहा-धोकर लौट आता हूँ।" वह चला जाता, बड़ी देर तक न लौटता, कभी देर से लौटकर कहता–"मुझे इस वक़्त भूख नहीं है।"

कभी आधी रात के वक़्त उठकर कहता–"हम सबको भूख लगी है।" खाना परोसने पर कहता, भूख नहीं है। कभी कभी डांट बताकर कहता–"छी, यह भी कैसा खाना है?" और खाना छोड़कर चला जाता। इस प्रकार सताने पर भी दुर्योधन ने बड़ी सब्रता के साथ
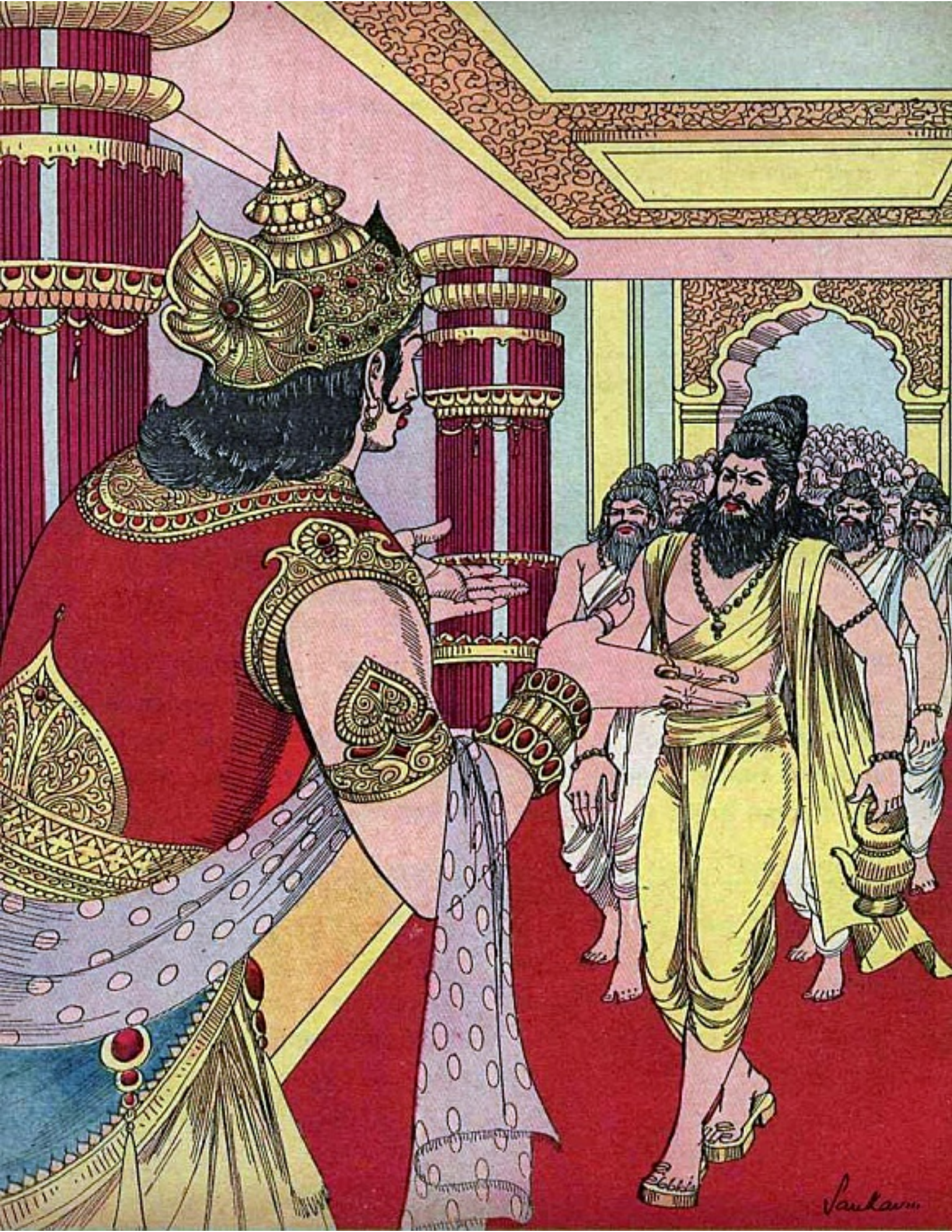
दुर्वास की सेवा की। इस पर प्रसन्न हो मुनि ने दुर्योधन से कहा–"राजन, मैं तुम्हारी परिचर्या से प्रसन्न हो गया हूँ। मांगो, तुम क्या चाहते हो?"

दुर्योधन को इस बात का बड़ा आनंद हुआ कि दुर्वास ने उसे शाप नहीं दिया। तब उसने शकुनि, कर्ण और दुश्शासन से परामर्श करके मुनि से निवेदन किया– "मुनिवर, अत्यंत धर्मात्मा युधिष्ठिर इस समय वनवास में हैं। उनके साथ उनके भाई, पत्नी और अनेक ब्राह्मण भी हैं। द्रौपदी जब सबको खाना खिलाकर, सोती रहेगी तब आप अपने शिष्यों के साथ वहाँ जाकर खाना मांगिये! यही वर मैं आपसे मांगता हूँ।" दुर्वास ने दुर्योधन की बात मान ली और अपने शिष्यों समेत काम्यक वन के लिए चल पड़ा।

"पांडव दुर्वास के क्रोध और शाप का शिकार हो नष्ट हो जायेंगे। इतने समय बाद हमारी इच्छा पूरी होने जा रही है।" कर्ण ने दुर्योधन से कहा।

काम्यक वन में एक दिन द्रौपदी अपने पतियों तथा ब्राह्मणों को खाना खिलाकर, स्वयं भी भोजन करके सो रही थी। उस वक़्त दुर्वास अपने दस हज़ार शिष्यों के साथ उनके आश्रम में आया।

युधिष्ठिर ने अपने भाइयों के साथ आगे बढ़कर दुर्वास मुनि का स्वागत किया, अर्घ्य, पाद्य इत्यादि से उसकी पूजा की। उसके चरणों में प्रणाम करके कहा– "महात्मा, आप अपने शिष्यों के साथ हमारा आतिथ्य ग्रहण कीजिये।"

दुर्वास ने यह नहीं सोचा कि इस भयंकर जंगल में रहनेवाले पांडव उसे तथा उसके दस हज़ार शिष्यों को खाना कैसे खिलायेंगे? उसने युधिष्ठिर के आतिथ्य को झट स्वीकार कर लिया। और गंगाजी में नहाने के लिए चला गया।

द्रौपदी की समझ में न आया कि इतने लोगों को भोजन कैसे करावे! अपने सामने कोई उपाय न देख द्रौपदी ने कृष्ण का स्मरण किया।

शिवपुराण

[११]

पार्वती के विवाह में आये हुए सभी अतिथि चले गये। शिवजी ने नन्दीश्वर से कहा—"मैं और पार्वती विश्राम करना चाहते हैं। तुम महा सौध का अलंकार करवा दो।"

नन्दीश्वर गणों के अधिपतियों को साथ ले महा सौध में चला गया। सौध को साफ़ करवा कर गुलाब जल से धुलवाया। जवादि इत्यादि सुगंधित द्रव्यों तथा मोती चूर्ण से पद्मों की आकृति में रंगोलियाँ सजायी गयीं। प्रवालों से निर्मित तल्प लगाया गया। दीवारों पर चित्र लटकाये गये। फल, फूल तथा खान-पान संबन्धी सभी चीजें यथास्थान रखी गयीं। इस तरह शयन गृह देखने में सुंदर लग रहा था।

नंदीश्वर ने जब शिवजी को सूचना दी कि शयनगृह सजाया गया है, तब शिवजी ने नंदीश्वर तथा गणाधिपतियों से कहा—"हम विश्राम करने जा रहे हैं, तुम लोग किसी को भीतर आने न दो, ताकि हमारी निद्रा भंग न हो जाय। महल के चारों तरफ़ पहरा बिठा दो।" ये बातें कह कर शिवजी पार्वती का हाथ पकड़ कर विश्राम करने शयन गृह में चले गये।

इस बीच तारकासुर देवताओं को हद से ज़्यादा सताने लगा। उन लोगों ने ब्रह्मा के पास जाकर कहा—"भगवन, आपने तारकासुर को जो वर दिया, उस की वजह से हम नाना प्रकार की यातनाएँ भोग रहे हैं। तारकासुर के मरने पर ही हमें सुख प्राप्त

अंतिम पृष्ठ का चित्र

होगा। इसलिए उस की मृत्यु का कोई उपाय सोचिये।"
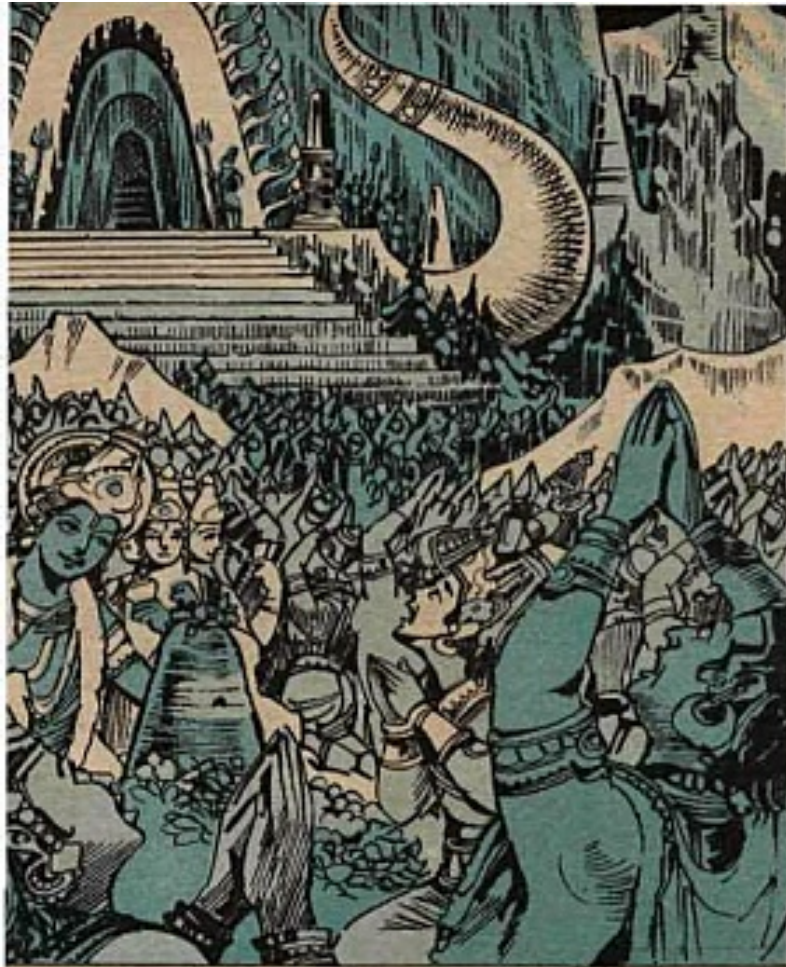
ब्रह्मा ने देवताओं को सांत्वना पूर्ण शब्दों में समझाया—"यह बात सही है कि मैंने तारकासुर को असाधारण वर दिये हैं। मगर मैं वर दिये बिना कैसे रह सकता था? तपस्या करने पर चाहे वे दुष्ट हों या अच्छे व्यक्ति हो, हमें वर देना पड़ता है। यदि उन्हें दुष्ट समझ कर हम वर न दे तो वे तपस्या करना छोड़ न देंगे! उन की तपस्या से पैदा होने वाली अग्नि सभी लोगों को जला देगी। हम लोकों की रक्षा करने केलिए वर देते हैं। उन वरों की मदद से वे लोग लोकों को सता रहे हैं। इस कारण से उन्हें मारने की ज़रूरत पड़ रही है। हम लोग विष्णु के पास जाकर अपने कष्ट कह सुनायेंगे।"

सबने विष्णु के पास जाकर तारकासुर की यातनाओं का परिचय दिया। विष्णु ने उन्हें समझाया—"पार्वती और परमेश्वर विवाह करके दांपत्य जीवन बिता रहे हैं। उनके पुत्र होने पर तुम लोगों की सारी तक़लीफ़ें दूर हो जायेंगी।"

"शिव-पार्वती के विवाह के हुए काफी दिन हो गये हैं। आप शिवजी से मिलकर हमारी कठिनाइयाँ उन्हें बता दीजिये।" देवताओं ने विष्णु से निवेदन किया।

विष्णु ब्रह्मा तथा देवताओं को साथ ले कैलास में आये। शिवजी के महल के चारों तरफ़ नन्दीश्वर वग़ैरह पहरा दे रहे थे। विष्णु ने नन्दीश्वर से कहा—"हम लोग शिवजी को देखने आये हैं। हमें महल के भीतर जाने दो।"

"शिवजी और पार्वती भीतर एकांत में हैं। शिवजी का आदेश है कि हम किसी को भीतर न भेजें। उनके आदेश का पालन करना हमारा कर्तव्य है। इसलिए आप कृपया हमें क्षमा करें।" नन्दीश्वर ने विष्णु से कहा।

विष्णु तथा देवता जिस काम पर आये उस काम में बाधा पड़ी। इसलिए विष्णु ने देवताओं से कहा—"तुम लोग पार्थिव लिंग

तैयार करके शिव-पंचाक्षरी का जाप करते हुए उनकी पूजा करो तो शिवजी प्रसन्न हो कर तुम्हें दर्शन देंगे। तब हम उन से निवेदन कर सकते हैं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि तुम लोगों का कार्य सफल होगा।" विष्णु ने इस प्रकार सलाह दी।

देवताओं ने मिट्टी से पार्थिव लिंग तैयार किया, पंचाक्षरी का जाप करते पूजाएँ कीं। तब सब लोग एक साथ "हर हर महा देव शंभो" चिल्ला उठे।

स्त्रोत्र प्रिय शिवजी ये शब्द सुनते ही महल से दौड़े-दौड़े बाहर आये और बोले—"देवताओ, तुम लोग मेरी पूजा किस उद्देश्य से कर रहे हो? बताओ!"

ब्रह्मा इत्यादि ने शिवजी से कहा—"हे ईश्वर! तारकासुर का वध करने के लिए तुम अपने एक पुत्र की सृष्टि करो।"

यह बात सुनते ही शिवजी ने अपने वीर्य को अग्नि कुण्ड में छोड़ दिया। इस पर पार्वती ने रूट कर शाप दिया कि देवताओं को संतान की प्राप्ति न हो।

शिवजी के वीर्य को पाकर अग्नि ताप के मारे परेशान हो उठा। इसी समय सप्त ऋषियों ने भक्ति के साथ अग्नि में होम करके पूर्णाहुति दी।

उस वक़्त अग्नि देव सप्त ऋषियों की पत्नियों को देख मोहित हो विरह का अनुभव करने लगा। यह बात अग्नि देव की पत्नी स्वाहा देवी को मालूम हो गयी। वह प्रत्येक मुनि की पत्नी के रूप में आकर अग्नि देव से जा मिली। पर वह अरुंधती का रूप धर न पायी। इस प्रकार स्वाहा देवी ने छे भागों को अपने कर्भ में धारण किया।

इस वजह से स्वाहा देवी को अपार वेदना का अनुभव करना पड़ा। इसलिए उसने अपने गर्भ के अंश को कैलास के एक शिखर पर त्याग दिया। उस अंश को वायुदेव ने गंगा में विसर्जित किया। गंगा ने उस अंश को नदी के किनारे वाली घास में ढकेल दिया। वह अंश क्रमशः परिपक्वता

को प्राप्त कर मार्गशीर्ष षष्ठी धनिष्ठा नक्षत्र में वृश्चिक लग्न में एक शिशु के रूप में बदल गया। उस शिशु के छे मुख, बारह हाथ और वज्रदेह प्राप्त हुये।

जगत में यह अफ़वाह फैल गयी कि अग्निदेव के द्वारा छे मुनि-पत्नियों ने उस शिशु का जन्म दिया है। यह बात मालूम होने पर मुनियों ने अपनी पत्नियों को त्यागना चाहा। तब स्वाहा देवी ने मुनियों के पास जाकर समझाया–"इस में दोष मेरा है! आप लोगों की पत्नियों ने कोई अपराध नहीं किया है।" पर मुनियों ने उसकी बात नहीं मानी, बल्कि यह कह कर अपनी पत्नियों को त्याग दिया कि इस अफ़वाह को हम निर्मूल कैसे कर सकते हैं।

मुनि पत्नियों ने गंगा के तट पर पहुँच कर छे मुखवाले उस शिशु को देखा। तुरंत उनकी छाती से दूध उमड़ पड़े। उस शिशु ने अपने छे मुखों से छठों मुनि पत्नियों के दूध पिये।

ब्रह्मा ने स्वयं वहाँ पहुँचकर उस शिशु की जन्म कुण्डली बनायी और उसका नाम करण किया। वही शिशु कुमारस्वामी है। उसके अन्य नाम हैं षण्मुख, स्कंध और गुह।

इस पर मुनि पत्नियों ने उस शिशु से पूछा–"बेटा, हमारे पतिदेवों ने हमें घर से निकाल दिया है। हमारा क्या होगा?"

"मैं आप लोगों का पुत्र हूँ। आप सब मेरी माताएं हैं। इसलिए आप सब मेरे साथ रह जाइये।" कुमारस्वामी ने कहा।

कुमारस्वामी दिन ब दिन बढ़ता गया। वह पहाड़ों पर घूमते सिंह और बाघों के साथ खेलते उन पर सवार करने लगा। उसे शिवजी का धनुष मिल गया। उस पर बाण चढ़ा कर उसने क्रौंच पर्वत के शिखर को तोड़ दिया। इसे देख उस पर्वत पर रहने वाले राक्षस कुमारस्वामी पर टूट पड़े। कुमारस्वामी ने सब को मार डाला।

इस बीच शिव-पार्वती के इक्कीस पुत्र पैदा हुए। वे विभिन्न गणों के मूल पुरुष बन कर गणाधिपति हुए।

को प्राप्त कर मार्गशीर्ष षष्ठी धनिष्ठा नक्षत्र में वृश्चिक लग्न में एक शिशु के रूप में बदल गया। उस शिशु के छे मुख, बारह हाथ और वज्रदेह प्राप्त हुये।

जगत में यह अफ़वाह फैल गयी कि अग्निदेव के द्वारा छे मुनि-पत्नियों ने उस शिशु का जन्म दिया है। यह बात मालूम होने पर मुनियों ने अपनी पत्नियों को त्यागना चाहा। तब स्वाहा देवी ने मुनियों के पास जाकर समझाया—"इस में दोष मेरा है! आप लोगों की पत्नियों ने कोई अपराध नहीं किया है।" पर मुनियों ने उसकी बात नहीं मानी, बल्कि यह कह कर अपनी पत्नियों को त्याग दिया कि इस अफ़वाह को हम निर्मूल कैसे कर सकते हैं।

मुनि पत्नियों ने गंगा के तट पर पहुँच कर छे मुखवाले उस शिशु को देखा। तुरंत उनकी छाती से दूध उमड़ पड़े। उस शिशु ने अपने छे मुखों से छठों मुनि पत्नियों के दूध पिये।

ब्रह्मा ने स्वयं वहाँ पहुँचकर उस शिशु की जन्म कुण्डली बनायी और उसका नाम करण किया। वही शिशु कुमारस्वामी है। उसके अन्य नाम हैं षण्मुख, स्कंध और गुह।

इस पर मुनि पत्नियों ने उस शिशु से पूछा—"बेटा, हमारे पतिदेवों ने हमें घर से निकाल दिया है। हमारा क्या होगा?"

"मैं आप लोगों का पुत्र हूँ। आप सब मेरी माताएं हैं। इसलिए आप सब मेरे साथ रह जाइये।" कुमारस्वामी ने कहा।

कुमारस्वामी दिन ब दिन बढ़ता गया। वह पहाड़ों पर घूमते सिंह और बाघों के साथ खेलते उन पर सवार करने लगा। उसे शिवजी का धनुष मिल गया। उस पर बाण चढ़ा कर उसने क्रौंच पर्वत के शिखर को तोड़ दिया। इसे देख उस पर्वत पर रहने वाले राक्षस कुमारस्वामी पर टूट पड़े। कुमारस्वामी ने सब को मार डाला।

इस बीच शिव-पार्वती के इक्कीस पुत्र पैदा हुए। वे विभिन्न गणों के मूल पुरुष बन कर गणाधिपति हुए।

१२१. प्राचीन ग्रीक देश के खेल

कहा जाता है कि ग्रीक वासियों ने ही व्यायाम संबंधी क्रीड़ाओं का प्रारंभ किया। निम्न लिखित प्राचीन शिल्प में मल्ल युद्ध, कुत्ते-बिल्ली का युद्ध, गेन्द और हाक़ी के खेल चित्रित हैं।

Photo by Hirdayesh Vimal
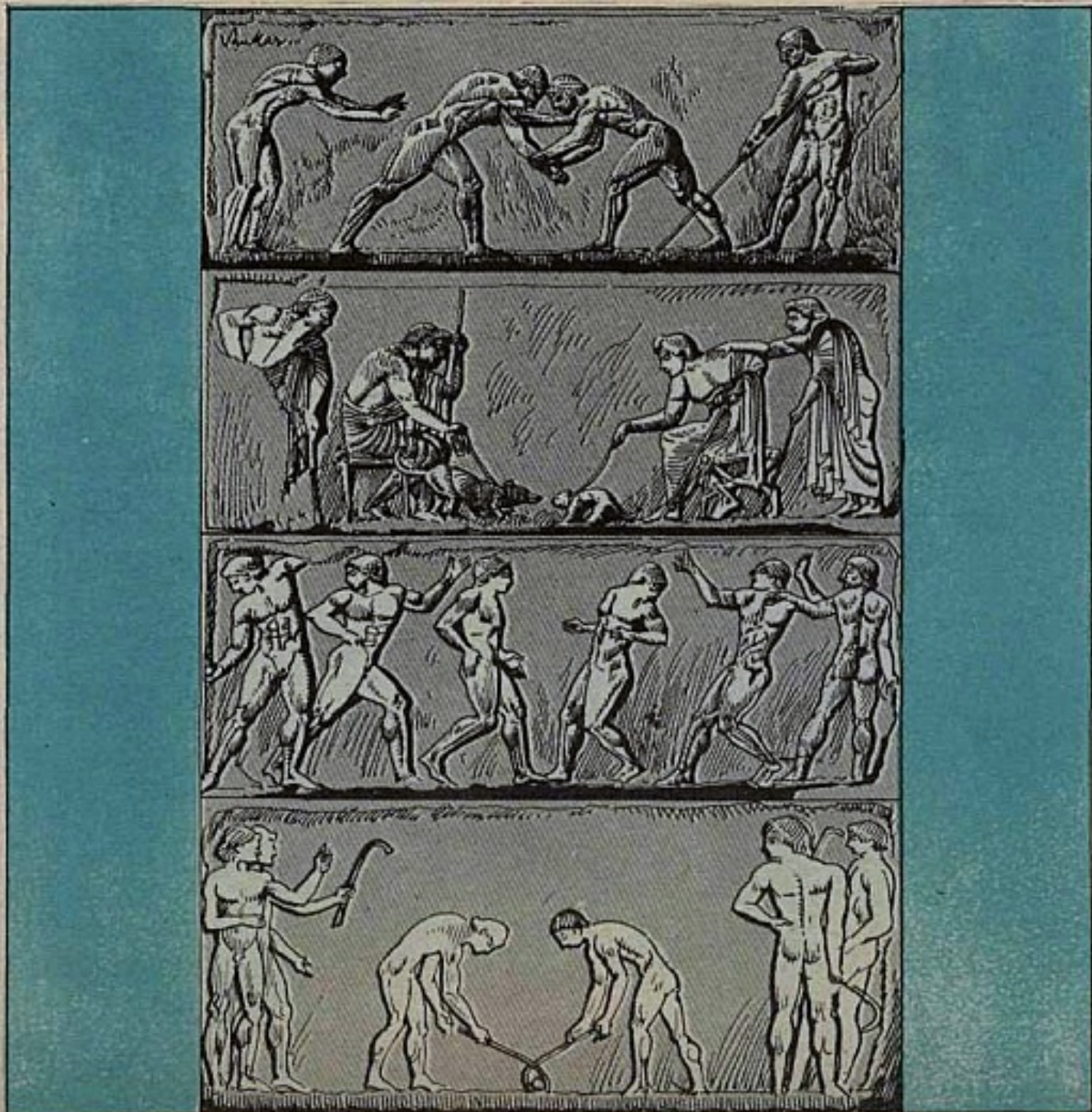
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

नकली चेहरा खूब लगाया !

प्रेषक :
उमाशंकर प्रसाद

Photo by S. B. Takalkar

कदमफार्म एरिया,
जेमशेदपुर

चेहरा एक, दो छाया ॥

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तियाँ जनवरी ५ तक प्राप्त होनी चाहिए।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ मार्च के अंक में प्रकाशित की जायंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

दूसरा मुखपृष्ठ
गणतंत्र दिवस-१

तीसरा मुखपृष्ठ
गणतंत्र दिवस-२

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

heros' A.S-98
घने काले बाल
और मोती से चमकते
दांतों के लिये
सेवाश्रमका
गाय छाप
उदयपुर
ब्राह्मी आँवला तैल
और काला
दंत मंजन
आयुर्वेद सेवाश्रम प्रायवेट लिमिटेड उदयपुर, वाराणसी, हैदराबाद

रेखागणित को आसान व भूगोल को रंगीन बनाइये...

पिथागोरस को मात दीजिये। रेखाचित्रों को रंगीन बनाइये ... कैम्लिन इन्स्ट्रुमेन्ट बाक्स व रंगीन पेंसिल लीजिये। जब कि एक काम में अचूक व दिखने में आकर्षक है तो दूसरी मुलायम लेड वाली और चलने में सरल है। पर दोनों टिकाऊ, कम घिसने वाली और किफ़ायती हैं।
कैम्लिन आपके लिए वैक्स केयान, वाटर कलर, पोस्टर कलर आदि विविध प्रकार की आर्ट सामग्रियां बनाते हैं। आपके नजदीक के विक्रेता के यहां मिलते हैं।।

कैम्लिन

कलर पेंसिल्स व
इन्स्ट्रुमेंट बाक्स खरीदिये
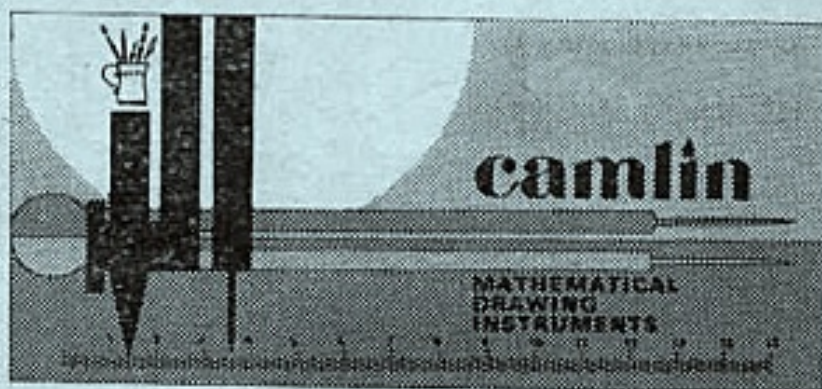
कैम्लिन प्राइवेट लिमिटेड
आर्ट मेटीरियल डिविजन,
जे. बी. नगर, बम्बई-५६ भारत